इकाई 11 शिक्षार्थी निष्पत्ति का आँकलन

संरचना

11.0 प्रस्तावना

11.1 उद्देश्य

11.2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिगम का आँकलन एवं मूल्यांकन : एक परिदृष्टि

- 11.2.1 मूल्यांकन
- 11.2.2 आँकलन
- 11.2.3 आँकलन एवं मूल्यांकन के महत्व
- 11.2.4 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

11.3 सतत् आँकलन की वर्तमान प्रणाली

- 11.3.1 सत्रीय कार्यों के माध्यम से सतत् आँकलन
- 11.3.2 सत्रीय कार्यों के प्रकार्य
- 11.3.3 सत्रीय कार्यों का निरीक्षण

11.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में ग्रेडिंग प्रणाली

- 11.4.1 अंकन प्रणाली की हानियाँ
- 11.4.2 ग्रेडिंग के लाभ
- 11.4.3 इग्नू में ग्रेडिंग प्रणाली

11.5 सतत् आँकलन के वैकल्पिक एवं नए तरीके

- 11.5.1 वैकल्पिक सतत् आँकलन क्या है?
- 11.5.2 रूब्रिक्स
- 11.5.3 परियोजना
- 11.5.4 खुली पुस्तक परीक्षा
- 11.5.5 सत्र–पत्र
- 11.5.6 मुक्त चिह्न (Badge)

11.6 सारांश

11.7 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

11.8 संदर्भ ग्रंथ

11.9 इकाई अंत अभ्यास

11.0 प्रस्तावना

इकाई 10 में, हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में परामर्श एवं अनुशिक्षण की आवश्यकता, अवधारणा, महत्व, भूमिका एवं पहलुओं पर चर्चा की। इकाई 11 में, हम अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन पर चर्चा करेंगे। जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया एक सतत् गतिविधि है। इसमें प्रारंभ से अंत तक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। अतः अधिगमकर्त्ता का निष्पादन एवं आँकलन प्रत्येक शैक्षणिक प्रणाली – परंपरागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के निर्णायक घटक की रचना करता है। यह इन अर्थों में निर्णायक है कि यह अधिगमकर्त्ता की उपलब्धि के स्तर बनाम निश्चित उद्देश्यों को जानने में अध्यापक को सक्षम बनाता है। दूसरे शब्दों में, यह निर्देश प्रस्तुत करने के स्तर और विद्यार्थियों के

अधिगम होने के स्तर के बीच अंतर को समझने में सहायता करता है। अन्यथा, अंतर के भेद को खो जाने की संभावना होती है और पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता का निर्णय होने वाले अधिगम की गुणवत्ता की बजाय अधिगम सामग्रियों की गुणवत्ता से होता है। इसलिए, आँकलन के लिए निर्दिष्ट यांत्रिकी पर ध्यान देना अधिक महत्वपूर्ण है और पढ़ाए गए एवं सीखे गए के बीच अंतर को चिह्नित करना भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उस अंतर को समाप्त करने में मदद करता है।

शिक्षार्थी के निष्पत्ति का सतत् आँकलन का मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में एक विशिष्ट महत्व है जो इसके लिए कुछ ऐसी यांत्रिकी प्रदान करता है जो न केवल अंतर के प्रसार को चिह्नित करने में मदद करता है बल्कि अधिगमकर्त्ता को प्रेरित करने और अपेक्षित एवं वास्तविक अधिगम के बीच अंतर को समाप्त करने में भी सहायता करता है। यद्यपि, केवल अध्यापक द्वारा प्रदत्त सत्रीय कार्यों एवं कम्प्यूटर द्वारा प्रदत्त सत्रीय कार्यों के माध्यम से किया गया सतत् आँकलन, शिक्षण एवं अधिगम के बीच ऐसे अंतर को दूर करने का एकमात्र प्रभावी यांत्रिकी नहीं है। अधिगमकर्त्ता के निष्पादन का आँकलन शिक्षण एवं अधिगम के लिए एक सामग्री के रूप में कार्य करता है और अधिगमकर्त्ता के निष्पादन को ग्रेड प्रदान करने का कार्य करता है। अधिगमकर्त्ता को निम्नलिखित अवसरों को प्रदान कर आवश्यक इसे रूप से किया जाए :

- एक सार्थक कार्य का निष्पादन करने;
- कार्यों का निष्पादन करने में उसकी योग्यता का निरूपण करने;
- सार्थक एवं उचित परिक्षेत्र के सम्बन्ध में एक योग्य व्यक्ति द्वारा प्रतिपुष्टि प्राप्त करने; और
- उसके निष्पादन को प्रदत्त ग्रेड के बारे में जानने।

तथापि, अकेले सतत् आँकलन अधिगमकर्त्ता के आँकलन को समग्र नहीं बना सकता है। अतः, सत्रीय कार्यों के अतिरिक्त, अन्य कई गतिविधियाँ हैं जैसे संपर्क कार्यक्रम, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ, परियोजना कार्य, शोध प्रबंध, स्व-आँकलन, सहपाठी-आँकलन, सत्रांत परीक्षाएँ आदि को साधनों के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है जिससे सतत् एवं व्यापक आँकलन निष्पादित होता है। ये सभी मिलकर संरचना के सतत् एवं व्यापक आँकलन की रचना करते हैं जैसा कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अपनाया गया है।

यद्यपि, यह माना गया है कि सतत् आँकलन की वर्तमान प्रणाली में सुधार के क्षेत्र हमेशा बने रहते हैं यह वैकल्पिक सतत् आँकलन यांत्रिकी के रूप में होता है जिसे अपेक्षित एवं प्राप्त अधिगम के बीच अंतर को समाप्त करने के लिए विचार किया जा सकता है। फिर भी जिन दुष्प्रभावों का वे सामना करते हैं उनको नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस इकाई में, हम अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन से संबद्ध इन सभी मुद्दों और पहलुओं पर दृष्टिपात करने का प्रयास करेंगे।

11.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में आँकलन एवं मूल्यांकन की अवधारणाओं और उनके महत्व का व्याख्या कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अपनाए गए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का विश्लेषण कर सकेंगे;

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में सतत् मूल्यांकन की वर्तमान प्रणाली की प्रशंसा कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अपनाई गई ग्रेडिंग प्रणाली का वर्णन कर सकेंगे; और
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में वैकल्पिक सतत् आँकलन की सार्थकता का विवेचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

11.2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिगम का आँकलन एवं मूल्यांकन : एक परिदृष्टि

दूरस्थ अध्यापकों को उन विविध तरीकों का अन्वेषण करना जरूरी होता है जिसमें उन्नत एवं प्रभावी अधिगम के लिए अधिगमकर्त्ता की स्वायत्तता, पारदर्शिता, प्रभावी प्रतिपुष्टि और आँकलन में अधिगमकर्त्ता की भागीदारी सुनिश्चित है। इस संदर्भ में अधिगमकर्त्ता के निष्पादन का आँकलन एक महत्व ग्रहण करता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिगम आँकलन एवं मूल्यांकन एक जटिल प्रक्रिया है। एक प्रमुख चुनौती जिसे हम जानते हैं, वह अधिगमकर्त्ता एवं अध्यापक के बीच स्थित दूरी जो है। इससे अवश्य ही एक ऐसी स्थिति पैदा होती है जिससे अध्यापक का नियंत्रण कम होता है अधिगमकर्ता का नियंत्रण बढ़ता है और यह जो पढ़ाया गया है और जो सीखा गया है के बीच दूरी घटाने के क्रम में है। यह निश्चय ही एक आसान कार्य नहीं है।

इस भाग में, हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिगम के आँकलन एवं मूल्यांकन का एक वृहद अवलोकन करेंगे।

11.2.1 मूल्यांकन

मूल्यांकन शब्द का अर्थ अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग होता है। कभी-कभी यह विद्यार्थियों को अंक प्रदान करने के उद्देश्य से उनके मूल्यांकन को प्रदर्शित करता है और कभी-कभी संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का निर्णय करने को भी प्रदर्शित करता है। यह एक व्यापक शब्द है जो विद्यार्थी के मूल्यपरक निर्णयों के साथ-साथ उसके व्यवहार के मात्रात्मक एवं गुणात्मक विवरणों को धारण करता है। इस प्रकार, सफल अधिगम के लिए शिक्षण बिना उच्च मूल्यांकन गुणवत्ता नहीं आ सकती है। इसलिए, मूल्यांकन को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के साथ एकीकृत करना जरूरी है।

मेरी थार्पे (1980) के अनुसार मूल्यांकन शिक्षा के कार्यक्रम के किसी भी पहलू के बारे में सूचना के संग्रह, विश्लेषण और व्याख्या की एक प्रक्रिया है। मूल्यांकन के आधार एक तरफ अधिगम उद्देश्य, निष्पादन मानक और उपलब्धियों की जाँच है तो दूसरी तरफ अधिगमकर्त्ता और विशेषज्ञों के विचार हैं। मूल्यांकन एक शैक्षणिक कार्यक्रम को बनाने में सहायता करता है, उसकी आधारभूत उपलब्धि का आँकलन करता है और इसकी प्रभावशीलता में सुधार करता है। यह कार्यक्रम की रूपरेखा, विकास और इसके कार्यान्वयन पर बहुमूल्य प्रतिपुष्टि भी प्रदान करता है। यह निश्चय ही शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह मूल्यपरक निर्णय करने, शैक्षणिक स्थिति का निर्धारण करने या अधिगमकर्त्ताओं की उपलब्धि को मापने में सहायता करता है। इस प्रकार, शैक्षणिक मूल्यांकन का जैसा कि परंपरागत शिक्षा प्रणाली की तरह ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के लिए भी विशेष निहितार्थ है।

एक प्रक्रिया के रूप में मूल्यांकन को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है – *रचनात्मक* या *योगात्मक*। रचनात्मक मूल्यांकन अधिगमकर्त्ता की कमजोरियों को पहचानने से संबद्ध है जो उन्हें उन पर नियंत्रण पाने में सहायता करने का दृष्टिकोण भी प्रदान करता है। इसे

नियमित या आवधिक अंतरालों पर निष्पादित किया जाना चाहिए। 'योगात्मक मूल्यांकन' जैसा कि शब्द सुझाता है, पाठ्यक्रम के अंत में मूल्यांकन है।

अधिगम प्रक्रिया के दौरान मूल्यांकन (सतत् आँकलन) प्रायः "रचनात्मक मूल्यांकन" के रूप में प्रचलित है जो अधिगमकर्त्ताओं के साथ-साथ अध्यापकों के लिए भी महत्वपूर्ण है। दूरस्थ शिक्षा में सतत् आँकलन अध्यापक एवं अधिगमकर्त्ता के बीच मुख्य संवादों के आधार की रचना करता है। यह आँकलन अपने आप में अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग है। यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियत कार्यों के मूल्यांकन के रूप में पूर्ण होता है जो मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अच्छाइयों एवं बुराइयों को बताता है, ताकि अधिगमकर्त्ता के पास स्वयं को समझने और सुधारने का बेहतर अवसर हो। यह मुक्त एवं दूरस्थ अध्यापकों के लिए भी मददगार है। यह उन्हें अधिगमकर्त्ताओं की आवश्यकताओं के अनुसार उनकी शिक्षण रणनीतियों को पुनः तय करने के लिए प्रतिपुष्टि प्रदान करता है। इस प्रकार मूल्यांकन, शिक्षा के लक्ष्य किस हद तक प्राप्त हो चुके हैं को जानने के लिए अनिवार्य हो जाता है।

11.2.2 आँकलन

आँकलन एक पाठ्यक्रम में अधिगमकर्त्ता की उपलब्धि और अधिगम के बारे में सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है जो उसके अधिगम में सुधार लाने का एक दृष्टिकोण देता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में आँकलन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है। जब अधिगमकर्त्ता एक निर्देशात्मक कार्यक्रम में व्यस्त रहता हैं तब उनकी उपलब्धि को मापने के लिए तैयार की गई उपकरण एवं प्रक्रियाओं की रूपरेखा को शामिल करता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में सत्रीय कार्य वे उपकरण हैं जो मुक्त एवं दूरस्थ अधिगमकर्त्ता एवं मुक्त एवं दूरस्थ अध्यापक के बीच शैक्षणिक और शिक्षाप्रद संवादों के आधार की रचना करते हैं। सत्रीय कार्य विद्यार्थियों को सुनिश्चित करने में समर्थ बनाते हैं कि वे अपनी पाठ्य सामग्री से जो सीखना अपेक्षित है उसे सीख चुके हैं। सत्रीय कार्य आँकलन के हिस्से की रचना करते हैं और इस प्रकार मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी के निष्पादन के मूल्यांकन का एक हिस्सा हैं।

शिक्षार्थियों की प्रगति और उपलब्धि के आँकलन के लिए प्रतिपुष्टि प्रदान करना और उनके निष्पादन के लिए ग्रेड प्रदान करना दोनों ही जरूरी हैं ताकि वे जानें कि वे कितने सफल हैं। यह उन सभी मामलों के लिए अनिवार्य है जब अधिगमकर्त्ताओं को ग्रेड प्रमाणपत्र, डिप्लोमा या डिग्री जारी करना अपेक्षित हो। सभी आँकलन प्रणालियों में यह महत्वपूर्ण है कि की गई जाँच वैध और विश्वसनीय दोनों होनी चाहिए। नियत कार्य अधिगमकर्त्ताओं को उनकी शक्ति और कमजोरी को जानने में सहायता करते हैं। यह अधिगमकर्त्ताओं को उनके निष्पादन को सुधारने एवं उनके द्वारा सामना किए जाने वाली मुश्किलों से पार पाने का अवसर देता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन के मुख्यतः दो प्रकार हैं : (क) आंतरिक आँकलन (सतत् आँकलन), और (ख) बाह्य आँकलन (सत्रीय आँकलन)।

i) **आंतरिक आँकलन (सतत् आँकलन)** : आंतरिक आँकलन वह है जहाँ अध्यापक और अधिगमकर्त्ता विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया का आँकलन करने में प्रत्यक्षतः जुड़े रहते हैं। इग्नू में सत्रीय कार्य, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ, संपर्क कार्यक्रम, परियोजना कार्य, शोध आदि साधन हैं जिसके माध्यम से आंतरिक आँकलन होता है।

ii) **बाह्य आँकलन (सत्रीय आँकलन)** : बाह्य आँकलन उन जाँचों को प्रदर्शित करता है जिनका आयोजन शैक्षणिक संस्थाओं या किसी बाह्य अभिकरण द्वारा किया जाता है।

बाह्य आँकलन, सत्रीय आँकलन हो सकता है और यह प्रायः अधिगम अवधि की समाप्ति पर आयोजित किया जाता है। कुछ मामलों में इसे योगात्मक आँकलन या सत्रांत आँकलन के रूप में जाना जाता है। फिर भी अधिगम पर एकमात्र सबसे मजबूत प्रभाव निश्चित तौर पर आँकलन प्रविधि का है। उन्नत आँकलन प्रविधियों को होना चाहिए :

- अधिगम के मानकों को और अधिक कठोर बनाना;
- विद्यार्थियों को रचनात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान करना;
- विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण योगात्मक सूचना प्रदान करना; और
- अधिगम प्रक्रिया को बढ़ाना।

आँकलन अधिगम को सहारा और आकार दे सकता है। उच्चतर शिक्षा में एक गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम एक आँकलन प्रणाली द्वारा अभिलक्षित होना चाहिए जिसके निम्नलिखित लक्षण हैं :

- उसके उद्देश्य पूर्णतया परिभाषित होने चाहिए।
- इसे प्रत्येक उद्देश्य से संबद्ध अपेक्षाओं को स्पष्टता से व्यक्त करना चाहिए।
- इसे एक विस्तृत प्रसार के अधिगम परिणामों का आँकलन करने में सक्षम होना चाहिए, चाहे वह विषय विशिष्ट हो या सामान्य हो।
- इसे संपूर्ण आँकलन को एकीकृत करना चाहिए।
- अध्यापक एवं उनके सहयोगियों के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से अधिगमकर्त्ताओं के कार्य पर लाभप्रद प्रतिपुष्टि प्रदान करने में इसे सक्षम होना चाहिए।
- इसके आँकड़ों को विद्यार्थियों के अधिगम पर एक संकेत देना चाहिए और उसी प्रकार गुणवत्ता के सतत् सुधार की प्रक्रिया को सूचित करना चाहिए।

बाह्य आँकलन औपचारिक संस्थागत आँकलन और मूल्यांकन प्रणाली के एक अंग के रूप में अध्यापकों एवं संस्थान द्वारा किया जाता है। कभी-कभी यह अन्य संस्थाओं के अध्यापकों को भी परीक्षकों के रूप में शामिल कर सकता है, जो आँकलन को अधिक विस्तृत और वैकल्पिक बनाता है।

आँकलन के ऊपर वर्णित दो विस्तृत प्रकारों के अतिरिक्त, आँकलन के अन्य प्रकार हैं जो अपनाए गए हैं जैसे विद्यार्थियों के अधिगम को सुधारने के प्रभावी साधन के रूप में विद्यार्थियों द्वारा स्वयं आँकलन करना, आँकलन प्रक्रिया में अध्यापकों की प्रत्यक्ष भागीदारी के बिना। इसमें सम्मिलित हैं – सतत् स्व-मूल्यांकन एवं सहयोगी मूल्यांकन।

iii) **सतत् स्व-आँकलन** : आप अपने एस.एल.पी.एम. से सूचना प्राप्त कर सकते हैं कि दूरस्थ अधिगमकर्त्ता द्वारा स्व-आँकलन के अंतर्निहित प्रावधान हैं। यद्यपि, आँकलन का कोई औपचारिक तरीका नहीं है कि अधिगमकर्त्ता उसे करें या नहीं। इस प्रकार यह आंतरिक आँकलन या बाह्य आँकलन का हिस्सा नहीं होता है।

वूड्स एवं अन्य (1988) स्व-आँकलन को स्व-निष्पादन आँकलन कहते हैं। उन्होंने कनाडा में मैक यूनिवर्सिटी में रसायन इंजीनियरिंग में स्व-आँकलन के उपयोग का वर्णन अपनी रिपोर्ट में निम्नलिखित परिभाषा के साथ किया है :

"एक व्यक्ति द्वारा अपनी शक्तियों एवं कमजोरियों के आँकलन एवं अपने निष्पादन का निष्पक्षता से आँकलन या मूल्यांकन करने की योग्यता स्व-आँकलन है। एक परिपक्व स्व-आँकलन स्वीकार करता है कि मूल्यांकन का सम्बन्ध निष्पादन से है न कि व्यक्ति से। जब एक आँकलन किया जाता है तो निर्णय इस बात का नहीं किया जाता कि एक व्यक्ति का निष्पादन अच्छा है या बुरा। बल्कि यह एक कार्य के निष्पादन का आँकलन है कि वह अच्छा या बुरा है। इस पर प्रकाश डालने के लिए स्व-आँकलन का नाम "स्व-निष्पादन आँकलन" होना चाहिए।"

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि चाहे उन संस्थानों या कार्यक्रमों में जहाँ आँकलन पूर्णतया एक विशेष वर्ग के लोगों द्वारा किया जाता है वहाँ विद्यार्थी के अधिगम का अनिवार्य तत्व यह है कि विद्यार्थियों को अपनी प्रगति का मूल्यांकन करने में स्वयं सक्षम होना चाहिए। स्व-आँकलन एक सहभागी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी स्वयं संलिप्त रहते हैं। यह कार्य शिक्षार्थी को अपनी पसंद के अध्ययन कार्यक्रम को पूर्ण करने के लिए प्रेरित करता है। वास्तव में यह आँकलन भिन्न उपकरण या यांत्रिकी तंत्र की मांग करता है।

इग्नू का स्व-अधिगम सामग्री शिक्षार्थियों को स्व-जाँच अभ्यास एवं अपनी प्रगति जाँच अभ्यास जैसी गतिविधियों के माध्यम से स्व-आँकलन के अवसर प्रदान करता है। ये स्व-जाँच अभ्यास व्यक्तिगत अधिगम में सार्थक योगदान प्रदान करते हैं। पाठ्यक्रम के दौरान शिक्षार्थी अभ्यास को नियमित दुहरा कर बहुत अधिक आत्मविश्वास प्राप्त करता है। स्व-जाँच अभ्यास गतिविधियाँ इकाई या अध्ययन के हिस्से की पुनरावृत्ति की प्रक्रिया के रूप में कार्य करती हैं जिसे विद्यार्थी ने किया है। इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों के साथ अपने उत्तरों की तुलना कर विद्यार्थी अपना आँकलन स्वयं करता है। विद्यार्थी अधिगम करते समय स्वयं आत्मविश्वास एवं मदद प्राप्त करते हैं। इन स्व-जाँच अभ्यासों ने विद्यार्थी में रूचि भी जागृत की है और उन्हें कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए प्रेरित भी करती है। इस प्रकार के आँकलन में किसी प्रकार की आलोचना का डर नहीं होता है।

iv) **सहयोगी आँकलन** : परंपरागत शिक्षा प्रणाली में सहयोगी आँकलन एक अन्तर्निहित अभ्यास है। विद्यार्थी एक समूह में अपने अनुभवों को साझा करते हैं और एक-दूसरे से सीखते हैं। विद्यार्थियों द्वारा एक-दूसरे से साझा किए गए अनुभव एवं आँकलन और अधिक वैकल्पिक हो सकते हैं जब आँकलन वितरित किए गए आँकलन सूची पर आधारित हो।

इसके अतिरक्ति, सहयोगी आँकलन सहयोगात्मक अधिगम और टीम कौशल विकसित कर सकते हैं। विद्यार्थी आसानी से अपनी समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं और अपने अध्ययन में बेहतर कर सकते हैं। दूरस्थ विद्यार्थी के लिए सहयोगी आँकलन अधिक मददगार हो सकता है, जबकि अल्पतम मुखाभिमुख अंतःक्रिया सहयोगी आँकलन के अवसर को सीमित करती है जो विद्यार्थी को पृथकता में अध्ययन करने में अत्यधिक मदद करते हैं। यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में लोकप्रिय एवं वैश्विक अभ्यास नहीं है। निःसंदेह, इस प्रकार के आँकलन को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नीति निर्णयों की आवश्यकता होती है तथा विद्यार्थियों के आँकलन एवं मूल्यांकन की यांत्रिकी में संबद्ध संस्थागत व्यवस्थाओं की अपेक्षा होती है।

अब हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में आँकलन एवं मूल्यांकन की सार्थकता को देखते हैं।

11.2.3 आँकलन एवं मूल्यांकन के महत्व

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में सतत् आँकलन और सत्रीय आँकलन को क्रमशः रचनात्मक आँकलन एवं योगात्मक आँकलन के रूप में भी जाना जाता है। एक इकाई के अध्ययन से नियमित जाँचों एवं नियत कार्यों का उपयोग जहाँ प्रत्येक कार्य अंतिम परिणाम में योगदान देता है उसे सतत् आँकलन के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार के आँकलन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए कि विद्यार्थियों के अधिगम को प्रेरित करने के लिए उन्हें नियमित प्रतिपुष्टि प्रदान करना और विद्यार्थियों को सूचना प्रदान करना जो उन्हें उनकी अधिगम रणनीतियों की प्रभावशीलता का निर्णय करने में मदद करेगा। समस्त शैक्षिक सत्र या वर्ष में दिए गए अभ्यासों, नियत कार्यों एवं प्रगति कार्यों को रचनात्मक आँकलन के उपकरणों के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार के आँकलन अनिवार्य कौशलों जैसे निबंध या नियत कार्य लेखन, गणना, समस्या समाधान, चित्रकला, वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग या बिना भय अथवा असफलता के उपकरणों की संक्रिया में विद्यार्थियों को अभ्यास देते हैं।

तथापि, रचनात्मक कार्यों का आँकलन करते समय, निम्नलिखित सिद्धान्तों का अवलोकन किया जाना चाहिए :

- विद्यार्थियों को यथाशीघ्र ग्रेड/अंकों को बता देना चाहिए। इस प्रतिपुष्टि का उद्देश्य विद्यार्थियों को अनुशिक्षकों/शैक्षणिक परामर्शदाताओं की अपेक्षाओं के सम्बन्ध में उनके निष्पादन के स्तर की सूचना प्रदान करना।
- अनुशिक्षकों को विस्तृत एवं रचनात्मक आलोचना प्रदान करनी चाहिए ताकि विद्यार्थी जानें कि उनसे क्या अपेक्षित है और उन्हें अपना निष्पादन कैसे सुधारना चाहिए।

हमें यह ध्यान में अवश्य रखना चाहिए कि यदि रचनात्मक आँकलन गलत तरीके से उपयोग हुआ हो तो यह आगे अधिगम में नुकसानदेह साबित हो सकता है। अतः अधिगमकर्त्ताओं को यह कहा जाना अनिवार्य है कि कहाँ उनका निष्पादन अपेक्षाओं से कम है या कहाँ वे आँकलन के कार्य को समझ नहीं पाए। तथापि, इसे सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए ताकि अधिगमकर्त्ता हतोत्साहित न हों ऐसे मामले बीच में छोड़ने में परिणत हो जाते हैं। अनुशिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को दी गई गलत सूचना कम अंक या अधिक अंक दोनों मामलों में हानिकारक हो सकती है। कम अंक या ग्रेड अधिगमकर्त्ताओं को या तो अधिक परिश्रम करने की सलाह दे सकता है या वे कार्यक्रम से ही हट जाते हैं। उसी प्रकार अधिक ग्रेड/अंक उन्हें उनकी योग्यता या ज्ञान का झूठा आत्मविश्वास दे सकता है।

सतत् आंतरिक आँकलन अध्यापक को उनके अधिगमकर्त्ताओं के विकास एवं ज्ञान के बारे में सतत् जागरूकता लाता है। यह एक प्रक्रिया है जो एक लम्बे समय तक चलती है और अधिगमकर्त्ताओं के बारे में एक संचयी निर्णय को क्रमिक बनाती है। यह एक अध्यापक को लक्षणों को देखने में भी समर्थ बनाती है जो अपेक्षित उद्देश्यों के अर्जन को निरूपित करता है जैसे शिक्षण जिस पर आधारित है उसके प्रति बदलती योग्यताएँ। आगे, यह विद्यार्थियों की परेशानियों एवं समस्याओं आदि की पहचान के आधार पर उपचारी सामग्रियों/अभ्यासों की योजना करने में अध्यापक की सहायता करता है। फिर भी, सतत् मूल्यांकन के बारे में बात करते समय हमें अवश्य जानना चाहिए कि इस प्रकार के आँकलन की अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ दोनों हैं जिन्हें संक्षेप में नीचे दिया गया है।

क) गुण

i) कई बार आँकलन करने को संभव बना देते हैं जिसे आंतरिक आँकलन में असफल होने के खतरे घट जाते हैं।

ii) आंतरिक आँकलन के दौरान कई प्रकार के साधन उपयोग में लाए जाते हैं।

iii) सतत् आंतरिक आँकलन अनुशिक्षकों/परामर्शदाताओं से अपेक्षा करता है कि वे आँकलन की शैक्षणिक एवं आँकलन उद्देश्यों के बारे में सोचे।

iv) एक इकाई के प्रत्येक भाग को अपेक्षाकृत एक संभावित अंतिम परीक्षा के अधिक विस्तार से जाँचा जा सकता है। अतः यदि उपचारी कार्य करने की आवश्यकता है तो वह आंतरिक मूल्यांकन की सहायता से सबसे अधिक प्रासंगिक समय पर निर्धारित किया जा सकता है।

v) यदि एक विद्यार्थी बीमार या कुछ समय के लिए दुर्भाग्यवश अनुपस्थित रहता है तो एक वैकल्पिक जाँच को व्यवस्थित करना सार्थक है।

ख) दोष

i) नकल करने की बहुत संभावनाएँ रहती हैं क्योंकि आँकलन कार्य एक प्रभावी निरीक्षण में नहीं होते हैं।

ii) विद्यार्थियों को गहन-अध्ययन के लिए थोड़ा समय मिलता है क्योंकि अपने निष्पादन पर पर्याप्त प्रतिपुष्टि प्राप्त किए बग़ैर वे निरंतर अगली जाँच की तैयारी करते रहते हैं।

iii) सतत् आंतरिक आँकलन कभी-कभी पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं, अतः विद्यार्थी एवं अध्यापक के बीच सम्बन्धों में तनाव संभव है।

iv) यह उपयोगकर्त्ताओं के मन में आँकलन की वैधता एवं विश्वसनीयता के बारे में संदेह पैदा कर सकता है।

इस प्रकार विद्यार्थी का निष्पादन प्रायः रचनात्मक एवं योगात्मक आँकलन के माध्यम से विश्लेषित होता है। रचनात्मक आँकलन सतत होता है और अधिक प्रभावी परिणाम के लिए शिक्षण एवं अधिगम समायोजित करने हेतु जरूरी सूचना प्रदान करता है। एक गतिविधि के दौरान यह एक विद्यार्थी को न केवल निगरानी करने में सहायता करता है बल्कि यह आगे के कार्यों को करने में उनकी समझ एवं तैयारी को माप भी सकता है। वैकल्पिक रूप से, योगात्मक आँकलन एक निश्चित समय पर केन्द्रित होता है जैसे, एक इकाई के अंत पर एक जाँच परीक्षा। चूँकि दूरस्थ अध्यापकों को अंतिम उत्पाद पर ग्रेड देने की बजाय वे विद्यार्थी को अधिक सहभागिता समर्थ करने और अध्ययन के संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थी की प्रगति के लिए प्रक्रिया पर अवश्य केन्द्रित करें, विशेष नियत कार्य या क्रियाकलाप जो दूसरों से पूरी तरह भिन्न हैं।

रचनात्मक एवं योगात्मक आँकलन, जैसा कि ऊपर एक साथ वर्णित है, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम में सतत् एवं व्यापक आँकलन की रचना करता है।

11.2.4 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

सतत् एवं व्यापक आँकलन को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में मुख्यतः तीन श्रेणियों – स्व-आँकलन, सतत् मूल्यांकन एवं सत्रांत परीक्षा में विभाजित किया जा सकता है।

- **स्व-आँकलन :** स्व-आँकलन में, स्व-आँकलन के प्रश्न या प्रगति जाँच के प्रश्न एस.एल.पी.एम.एस के एक दिए गए पाठ्यक्रम से लिए जाते हैं। एक दूरस्थ विद्यार्थी अपनी प्रगति को जानना चाहेगा। परंतु इस सम्बन्ध में विद्यार्थी को अध्यापक से प्रतिपुष्टि प्राप्त करने का प्रावधान नहीं है। फिर भी, दूरस्थ विद्यार्थी इकाई के अंत में दिए गए

उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना कर अपने निष्पादन का आँकलन कर सकता है और इस प्रकार दूरस्थ अधिगम सामग्रियों से स्वयं प्रतिपुष्टि प्राप्त कर लेता है। स्व-आँकलन के ये प्रश्न एवं उत्तर रचनात्मक आँकलन के उपकरण हैं जो विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से सीखने या निष्पादन करने में सहायता करते हैं। इन प्रश्नों में या तो बहु-विकल्पी प्रश्न या लघु उत्तरीय प्रश्न या दोनों शामिल होते हैं। सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं है कि यह हो रहा है या नहीं और यह दूरस्थ विद्यार्थी के निष्पादन के मूल्यांकन की संस्थागत योजना की रचना नहीं करता है।

- **सतत् आँकलन :** मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में यह नियत कार्यों के माध्यम से होता है। सामान्यतः नियत कार्य का संपूर्ण आँकलन में 25–30 प्रतिशत अधिभार होता है। सामान्यतः यह अधिगमकर्त्ता एवं अध्यापक के बीच द्विमार्गीय प्रक्रिया है। नियत कार्य एक दूरस्थ अधिगमकर्त्ता के रूप में उसकी पृथकता की भावना को कम करने में भी सहायता करता है। लिखित नियत कार्यों पर प्रतिपुष्टि भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अगले नियत कार्य में इससे विद्यार्थी के निष्पादन को सुधारना अपेक्षित है।

- **सत्रांत परीक्षा :** इसमें सत्र के अंत, सेमेस्टर के अंत और अंतिम परीक्षा सम्मिलित हैं। उसे वर्ष में एक बार या दो बार आयोजित किया जा सकता है जो संस्थागत नीति और पाठ्यक्रम की जटिलता पर निर्भर करता है। यह अधिकांशतः कागज-कलम आधारित गतिविधि है। सत्रांत परीक्षा का अधिभार संपूर्ण आँकलन का लगभग 70–75 प्रतिशत होता है।

  निःसंदेह सतत एवं व्यापक आँकलन के कुछ अन्य घटक भी हैं।

- **अन्य घटक :** अन्य घटक जैसे इंटर्नशिप, प्रयोगात्मक कार्य, परियोजना कार्य (जिसमें मौखिक परीक्षा सम्मिलित हो सकती हैं), सेमिनार प्रस्तुतीकरण आदि का उपयोग भी अधिगमकर्त्ता के निष्पादन का आँकलन करने के लिए किया जाता है जो पाठ्यक्रम की प्रकृति पर निर्भर करता है।

हम भाग 11.3 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अपनाए गए लोकप्रिय सतत् एवं व्यापक आँकलन की वर्तमान प्रणाली की गहन समझ आपको प्रदान करेंगे।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) सतत् आँकलन पर टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.3 सतत् आँकलन की वर्तमान प्रणाली

विद्यार्थी के अधिगम या निष्पादन के सतत आँकलन का मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में एक विशिष्ट हित एवं महत्व है क्योंकि यह अधिगमकर्त्ता की प्रगति के मूल्यांकन की यांत्रिकी प्रदान करता है। साथ ही साथ शिक्षण की अपेक्षा और अधिगम की उपलब्धि के बीच अंतर को पहचानने में सहायता करता है और इस प्रकार ऐसे अंतर को समाप्त कर विद्यार्थी को प्रेरित करने और अधिगम को सशक्त करने में योगदान देता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि, दूरस्थ अधिगमकर्त्ता के साथ संवाद स्व-अधिगम सामग्रियों के माध्यम से होता है तथा विद्यार्थियों को पत्र लिखकर, फोन पर बातकर, टेलीकॉफ्रेंसिंग से, रेडियो से और मुखाभिमुख परामर्श, कम्प्यूटर-संगत शिक्षण-अधिगम, विद्यार्थियों के नियत कार्यों पर प्रतिपुष्टि के रूप में निर्देशित शिक्षात्मक संवाद, आदि तरीके से सहायता करता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में, दूरस्थ अधिगमकर्त्ता और दूरस्थ अध्यापक के बीच शैक्षिक एवं शिक्षात्मक संवाद के संस्थागत आधार सत्रीय कार्य हैं। सत्रीय कार्य विद्यार्थियों को सुनिश्चित करने में समर्थ करता है कि उन्होंने वास्तव में अपनी पाठ्य सामग्री से वह सब सीख चुके हैं जो उनसे सीखना अपेक्षित है। वास्तविक शिक्षण-अधिगम नियत कार्यों के माध्यम से होता है।

दूरस्थ शिक्षा में नियत कार्यों के मूल्यांकन के माध्यम से दोहरा संवाद निम्नलिखित उद्देश्यों को बताता है :

- विद्यार्थी की प्रेरणा और रूचि को सहारा देता है;
- अध्यापक टिप्पणियों, व्याख्याओं और सुझावों से अर्जित ज्ञान एवं कौशलों को लागू करने में विद्यार्थियों को सक्षम कर उन्हें सुसाध्य एवं बल प्रदान करता है; और
- विद्यार्थियों की प्रगति का आँकलन करता है और उन्हें एक उपकरण प्रदान करता है जिसके माध्यम से अधिगमकर्त्ता अपनी शैक्षिक स्थिति एवं आवश्यकताओं का निर्णय कर सकते हैं।

एक अध्यापक का सर्वोत्तम गुण अधिगमकर्त्ता के कठिन परिश्रम, प्रयास और उसके द्वारा इसमें लगाए गए महत्वपूर्ण समय को ध्यान रखना है। टिप्पणी लिखते समय अध्यापक को कुछ ऐसी टिप्पणियों के प्रति सावधान रहना चाहिए जो अधिगमकर्त्ताओं में एक गलत संवेदनात्मक प्रतिक्रिया को सृजित कर सकती है। टिप्पणियों को अधिगमकर्त्ताओं की नैतिकता को उच्च बनाए रखने एवं उनके निष्पादन के अपेक्षित स्तर तक ले जाने में उनकी सहायता करने वाली टिप्पणी से युक्त होना चाहिए।

11.3.1 सत्रीय कार्यों के माध्यम से सतत आँकलन

वास्तविक शिक्षण-अधिगम स्व-निर्देशात्मक सामग्रियों एवं संबद्ध सत्रीय कार्यों के माध्यम से संभव होता है। सत्रीय कार्य दूरस्थ विद्यार्थी एवं दूरस्थ अध्यापक के बीच शैक्षिक एवं अनुदेशात्मक संवादों के लिए महत्वपूर्ण उपकरण हैं। सत्रीय कार्य विद्यार्थियों को सुनिश्चित करने में समर्थ करते हैं कि वे पाठ्य सामग्रियों से सब कुछ सीख चुके हैं जो उनसे अपेक्षित था। किंतु मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के सत्रीय कार्य अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन में विभिन्न कार्य करते हैं। अब हम सत्रीय कार्यों के प्रकारों को देखते हैं।

सत्रीय कार्यों के प्रकार : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन के लिए प्रयुक्त आँकलनों के दो प्रकार हैं :

- अनुशिक्षक द्वारा अंकित सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.); और
- कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्य (सी.एम.ए.)।

कुछ कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों में केवल अध्यापक द्वारा अंकित सत्रीय कार्य होते हैं और कुछ में केवल कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्य और कुछ अन्य में अध्यापक द्वारा अंकित सत्रीय कार्य एवं कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्य दोनों होते हैं। ये सत्रीय कार्य सतत आँकलन के एक अनिवार्य घटक की रचना करते हैं जो अधिगमकर्त्ताओं के अंतिम आँकलन में योगदान देते हैं। कई मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में उन सत्रीय कार्यों को सभी अधिगमकर्त्ताओं द्वारा जमा करना अनिवार्य एवं सत्रांत या अंतिम परीक्षा लेने के लिए पूर्वापेक्षित है।

i) **कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्य (सी.एम.ए.):** इनका निर्धारण पाठ्यक्रम की टीम/संकाय द्वारा किया जाता है। कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्य में वैकल्पिक प्रकार के प्रश्न होते हैं और विद्यार्थियों को दिए गए विकल्पों से उत्तर चुनने को कहा जाता है। विद्यार्थी अपने उत्तर एक विशेष फार्म पर दर्ज करते हैं जिसे ओ.एम.आर. कहा जाता है। इससे प्रश्न से संबद्ध प्रकोष्ठ में पेंसिल के माध्यम से उत्तर अंकित किया जाता है। अधिगमकर्त्ताओं को इन सत्रीय कार्यों पर भी प्रतिपुष्टि प्रदान की जाती है।

   कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्य विद्यार्थियों के कुछ निश्चित तथ्यों, मानदण्डों एवं सूचनाओं तथा तर्कों को पहचानने की योग्यता की जाँच करते हैं। कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्य में विकल्प जाँच का उपयोग एक विवाद का विषय बन चुका है। फिर भी, जो लोग इसके पक्ष में तर्क देते हैं वे कहते हैं कि ये त्वरित अंकन का समर्थन करते हैं और संबद्ध शैक्षिक अच्छाइयों के बारे में बग़ैर बहस के जाँच करता है।

ii) **अनुशिक्षक द्वारा अंकित सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.):** ये एक शीर्षक पर चर्चा करने की परंपरागत कौशलों की जाँच करते हैं और तर्क करते हैं तथा इसमें कुछ प्रयोगात्मक कार्य होते हैं। अध्यापक द्वारा अंकित सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) पाठ्यक्रम की टीम, पाठ्यक्रम लेखक या कला संकाय द्वारा निर्धारित दीर्घ उत्तर, लघु उत्तर, निबंध प्रकार एवं समस्या समाधान के प्रश्नों पर आधारित होते हैं। विद्यार्थियों से उनके अपने उत्तरों की रचना करना अपेक्षित है। कुछ पाठ्यक्रमों में अधिगमकर्त्ताओं से एक परियोजना तैयार करना या विस्तारित संपर्क कार्यक्रमों में भाग लेना अपेक्षित होता है जो दो या तीन सामान्य सत्रीय कार्यों के बराबर हो सकते हैं।

   सत्रीय कार्यों के उत्तर विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन केन्द्र पर जमा कराया जाता है। इन उत्तरों का मूल्यांकन इस उद्देश्य से नियुक्त प्रशिक्षित परामर्शदाताओं द्वारा किया जाता है। वे इन सत्रीय कार्यों पर सीमान्त के साथ-साथ वैश्विक शैक्षिक टिप्पणियाँ लिखते हैं और प्रत्येक सत्रीय कार्य पर ग्रेड भी देते हैं। मूल्यांकित सत्रीय कार्य वापस समय पर अधिगमकर्त्ताओं को भेज दिए जाते हैं ताकि वे अपने अधिगम पर प्रतिपुष्टि प्राप्त करें।

   यहाँ आप इकाई 10 को पुनः देख सकते हैं जहाँ हमने विभिन्न प्रकार की शैक्षिक टिप्पणियों पर चर्चा की है। अध्यापक द्वारा अंकित सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) मूल्यांकन के संदर्भ में आप सकारात्मक टिप्पणियों को याद करने की कोशिश कर सकते हैं जो अधिगमकर्त्ताओं के निष्पादन को सुधारने के क्रम में अध्यापकों से अपेक्षित हैं। वस्तुतः अध्यापक द्वारा अंकित सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) विभिन्न कार्यों को करते हैं।

11.3.2 सत्रीय कार्यों के प्रकार्य

सत्रीय कार्य दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के एक महत्वपपूर्ण घटक की रचना करते हैं। ये सत्रीय कार्य निम्नलिखित प्रकार्यों का निष्पादन करते हैं:

- **संवाद/शिक्षाशास्त्रीय अंतःक्रियाओं की पहल करना :** सत्रीय कार्यों के माध्यम से अधिगमकर्त्ता अध्यापक के साथ संवाद का एक अवसर प्राप्त करते हैं और इस प्रकार शिक्षाशास्त्रीय अंतःक्रियाओं का अवसर प्राप्त करते हैं जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को त्वरित करती है।

- **पृथकता की भावना को तोड़ना :** सत्रीय कार्यों को नियमित अंतराल पर जमाकर समय पर प्रतिपुष्टि प्राप्त कर अधिगमकर्त्ता पूर्णतः पृथकता अनुभव नहीं करता है। अधिगमकर्त्ता मनोवैज्ञानिक रूप से मजबूत हो जाता है जो उसे तीव्र अधिगम में सहायता करता है।

- **दूरस्थ विद्यार्थी एवं दूरस्थ अनुशिक्षक दोनों को प्रतिपुष्टि प्रदान करना :** शिक्षण की शब्दावली में अध्यापक की टिप्पणियाँ बहुत सरल तरीके से अधिगमकर्त्ता की शक्तियों एवं कमजोरियों को व्यक्त करती हैं। विद्यार्थी अपनी परेशानियों पर आसानी से विजय प्राप्त कर लेता है और उसी समय अध्यापक विद्यार्थी एवं स्वयं के बारे में भी प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है। विद्यार्थियों के साथ बात कर अध्यापक अपनी शिक्षण योग्यता का आँकलन करता है और यदि अपेक्षित हो तो तदनुसार अपनी शिक्षण रणनीतियों को परिष्कृत करता है।

- **विद्यार्थियों द्वारा अधिगम को पुनर्बलीकरण :** अध्यापक की टिप्पणियों, व्याख्याओं एवं सुझावों से अर्जित कौशलों एवं ज्ञान का उपयोग करने में विद्यार्थियों को समर्थ बनाकर सत्रीय कार्य विद्यार्थी के अधिगम को सुसाध्य बनाने में सहायता करते हैं। सत्रीय कार्य जब उचित तरीके से संभाले जाते हैं तो त्वरित टिप्पणी और अध्यापक की प्रतिपुष्टि से अधिगम को पुनर्बलित करते हैं। अनुशिक्षक द्वारा लिखी गई शिक्षण टिप्पणियाँ अधिगमकर्त्ता को समय पर सत्रीय कार्यों को भविष्य में बेहतर बनाने, पूर्ण करने और सही रूप देने में सहायता करती हैं। वे अध्यापक एवं अधिगमकर्त्ता के बीच द्विमार्गी संवाद को प्रभावित करते हैं।

- **सतत् आँकलन :** सत्रीय कार्य अधिगमकर्त्ता को सतत आँकलन प्रदान करते हैं। जैसा कि पूर्व में विचार किया गया है सत्रीय कार्य अधिगमकर्त्ता को प्रतिपुष्टि के संदर्भ में स्वयं सुधरने का अवसर प्रदान करता है।

इस प्रकार, सत्रीय कार्य दूरस्थ अधिगमकर्त्ताओं के बीच अधिगम को न केवल सुसाध्य एवं प्रोन्नत करते हैं बल्कि अधिगमकर्त्ता के निष्पादन का आँकलन करते हैं। प्रभावी अधिगम को प्रोन्नत करने के क्रम में सत्रीय कार्यों का प्रभावी निरीक्षण आवश्यक है।

11.3.3 सत्रीय कार्यों का निरीक्षण

सत्रीय कार्यों का निरीक्षण (मॉनीटरिंग) एवं रखरखाव, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसके विपरीत, शिक्षण-अधिगम पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है और तंत्र ढह सकता है। अध्यापक द्वारा सत्रीय कार्यों पर की गई टिप्पणियों का उचित निरीक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए अपेक्षित है कि :

क) मानकों की एकरूपता के उचित स्तर को बनाए रखा जाता है।

ख) सत्रीय कार्यों एवं सत्रीय कार्य पत्रकों दोनों पर क्रमशः उचित टिप्पणियाँ की गई हैं।

निरीक्षण का महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित को प्रतिपुष्टि प्रदान करना है :

i) जो विद्यार्थी सत्रीय कार्यों का उत्तर जमा कर चुके हैं;

ii) अध्यापक जिन्होंने सत्रीय कार्यों का आँकलन कर लिया है; और

iii) संकाय सदस्य जिसने अधिगमकर्त्ता के लिए अध्ययन सामग्री निर्मित की है और सत्रीय कार्यों की रूपरेखा तैयार की है।

यह सक्षम अनुशिक्षकों को धारण करने में सहायता करता है। वर्ष भर में अनुशिक्षक द्वारा जाँच किए गए सत्रीय कार्यों मे से कोई भी चयनित किया जाता है और संकाय या इस उद्देश्य के लिए नियुक्त टीम को भेज दिया जाता है। किसी अनुशिक्षक द्वारा अंकित किए गए सत्रीय कार्यों के मॉनीटरिंग के परिणामस्वरूप यदि मॉनीटर पाता है कि अनुशिक्षक या तो उदार है या कठोर है या असंगत है तो मॉनीटर अपनी टिप्पणियों के साथ उसे सूचित करता है। यह सूचना अन्य संबद्ध व्यक्तियों के पास सुधार की उचित कार्रवाई के लिए भेज दी जाती है।

इग्नू में हमने एक मॉनीटरिंग यांत्रिकी अपनाया है जो समय-समय पर बदलता है। तथापि, यह संभव है कि विभिन्न प्रकार की यांत्रिकी अपनाई जाएँ। मॉनीटरिंग तभी सार्थक हो सकती है जब मॉनीटर के निर्णय को गंभीरता से कार्यान्वयन हो।

सत्रीय कार्यों के निरीक्षण मॉनीटरिंग की प्रक्रिया निम्नलिखित को सम्मिलित करती है :

क) प्रेषण

- पाठ्यक्रमों से संबद्ध सत्रीय कार्यों की सूची, सार्थक दिशा-निर्देश आदि।
- समय पर विद्यार्थियों को सार्थक पाठ्य सामग्री एवं सत्रीय कार्य।

ख) प्रबंधन

- विद्यार्थियों द्वारा सत्रीय कार्यों को जमा करना।
- अध्ययन केन्द्रों द्वारा सत्रीय कार्यों का रखरखाव।
- मूल्यांकनकर्त्ताओं को सत्रीय कार्यों का प्रेषण।
- चयनित मूल्यांकित सत्रीय कार्यों को मॉनीटरिंग के लिए मुख्यालय भेजना।
- अध्ययन केन्द्रों द्वारा आँकलन पत्रों को मुख्यालय भेजना।
- अध्ययन केन्द्रों द्वारा मासिक मूल्यांकन रिकार्डों को क्षेत्रीय केन्द्रों पर भेजना।

ग) शैक्षणिक पहलू

- त्रुटियों की पहचान।
- शिक्षण टिप्पणियाँ।
- शिक्षा की टिप्पणियों की उपयुक्तता।
- ग्रेडों की सटीकता।
- वैश्विक टिप्पणियों का स्पष्टीकरण।
- स्वयं सत्रीय कार्य पर परामर्शदाताओं की टिप्पणियाँ।

इस प्रकार, अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के प्रभावी सतत आँकलन में, सत्रीय कार्यों का मॉनीटरिंग एक निर्णायक भूमिका निभाता है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में एक सत्रीय कार्य के मुख्य प्रकार्य क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में ग्रेडिंग प्रणाली

परंपरागत प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बीच सबसे प्रमुख अंतरों में से एक है कि परंपरागत प्रणाली में सुधार, आँकलन और अधिगमकर्त्ता की प्रगति को प्रदर्शित करने के लिए प्राथमिक तौर पर लेखन कार्य है, जबकि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में सत्रीय कार्यों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य बजाय कि अंक/ग्रेड प्रदान करने के शिक्षण एवं अधिगम है। सत्रीय कार्यों का आँकलन साथ-साथ शिक्षण का एक कार्य भी है। अनुशिक्षक का लक्ष्य अधिगमकर्त्ता के अधिगम को प्रोन्नत करना होना चाहिए और सत्रीय कार्यों के माध्यम से आँकलन, अनुशिक्षक एवं अधिगमकर्त्ता के बीच एक संवाद के रूप में हो। अतः सबसे महत्वपूर्ण कार्य अनुशिक्षक की टिप्पणियों के माध्यम से प्रभावी शिक्षण है। इसलिए, अनुशिक्षक को इस बात की गहन समझ होनी चाहिए कि सत्रीय कार्य पर कैसे और किस प्रकार शिक्षण टिप्पणी लिखी जाए जो उनके एवं अधिगमकर्त्ता के बीच द्विपक्षीय संवाद को प्रोन्नत करें। इन सभी टिप्पणियों पर इकाई 10 में गहनता से चर्चा की जा चुकी है।

भारत में, ग्रेडिंग अपेक्षाकृत एक अद्यतन नवाचार है। अंक प्रदान करने का परंपरागत तरीका और ग्रेडिंग का अद्यतन नवाचार दोनों ही आँकलन और जाँच परीक्षा परिणामों की व्याख्या एवं रिपोर्टिंग से संबद्ध हैं। अंक प्रदान करने की गहरी जड़ें हैं और लम्बे समय से प्रचलन में है। अब भी, अधिकांश शैक्षणिक संस्थान/प्रणालियाँ इस पर निर्भर हैं। अंक प्रदान करने की प्रणाली में किसी पाठ्यक्रम का परिणाम प्रायः 0 – 100 के पैमाने पर व्यक्त किया जाता है। ग्रेडिंग प्रणाली के मामले में, परिणाम को ग्रेड में व्यक्त किया जाता है जिनकी सीमा 5, 7 या 9 बिन्दुओं की होती हैं। ये ग्रेड प्रायः अक्षरों जैसे A, B, C, D, E आदि में व्यक्त किए जाते हैं या अंकों में 1, 2, 3, 4, 5, आदि के रूप में व्यक्त किए जाते हैं। इग्नू, A, B, C, D और E वाली 5 ग्रेड प्रणाली को अपनाता है, जिनके ग्रेड प्रायः क्रमशः 5, 4, 3, 2 और 1 होते हैं।

अंक प्रणाली या ग्रेडिंग प्रणाली प्रत्येक की कुछ अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ हैं। यद्यपि, विभिन्न परिस्थितियों में अच्छाइयों एवं बुराइयों के अनुपात में विविधता हो सकती है। कहीं अच्छाइयाँ अधिक और बुराइयाँ कम हो सकती है। तो कहीं इसके विपरीत हो सकता है। इसलिए, जब भी वैकल्पिक प्रणाली की आवश्यकता पाई जाती है तो परिणामस्वरूप नवाचार होते हैं। प्रणाली बनाना सत्ताओं को न केवल अधिगम परिणामों/ निष्पादनों को आंकित सूचकांक या स्कोर में व्यक्त करने में सहायता करता है बल्कि विविध पाठ्यक्रमों के लिए अधिगमकर्त्ताओं के चयन एवं प्रवेश में भी सहायता करता है। फिर भी, यह बहुत सी कमियों से पीड़ित है।

11.4.1 अंकन प्रणाली की हानियाँ

अंक प्रणाली का महत्वपूर्ण नुकसान है कि त्रुटियों का प्रसार अंक प्रदान करने की सीमा तक होता है। यह त्रुटियाँ मुख्यतः दो प्रकार की विविधताओं – "अंक प्रदान करने वाले की परिवर्तनशीलता" और "विषय की परिवर्तनशीलता'' के कारण आती हैं। इन पर हम नीचे चर्चा कर रहे हैं :

i) **परीक्षक भिन्नता** : सामान्यतः हमारे पास दो प्रकार के प्रश्न होते हैं : वैकल्पिक और विषयनिष्ठ। वैकल्पिक जाँचों में अंक प्राप्त करने की विश्वसनीयता सुनिश्चित है, यदि वही प्रश्नपत्र के उत्तर को एक से अधिक परीक्षक द्वारा भी जांची जाय, यद्यपि, विषयनिष्ठ जाँचों में वही प्रश्नपत्र के उत्तर पुस्तिका को एक से अधिक परीक्षक द्वारा जाँची जाएँ तो अंक प्राप्त करने की विश्वसनीय सुनिश्चित नहीं होती है। विभिन्न परीक्षकों के लिए इसके उद्देश्यों को दिखाना मुश्किल है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि यद्यपि एक विषयनिष्ठ उत्तरपुस्तिका एक परीक्षक को जाँचने के लिए दी जाती है और दूसरी बार वही परीक्षक अपनी अंक प्रदान करने में स्थिरता नहीं रख सका। अंक हर बार परिवर्तनशील हो सकते हैं। अंक प्रदान करना एक परीक्षक से दूसरे परीक्षक पर भी भिन्न हो सकते हैं। इस प्रकार, की प्रणाली में अंक की स्थिरता बनाए रखना कठिन होता है।

   दूसरा, परीक्षक के निर्णय की शुद्धता कि 100 में से 40 अंक प्रदान किए जाए 41 नहीं या इसके विपरीत यह भी हमेशा प्रश्न चिह्न लग सकता है।

   तीसरा, अंक देना पूर्वाग्रह से ग्रसित हो सकता है। परीक्षक विद्यार्थी "क" का पक्ष लें और "ख" का नहीं तो यह अंक प्रणाली को एक त्रुटिपूर्ण प्रणाली बना देता है क्योंकि अंक प्रदान करने वाला परिवर्तनशील है।

ii) **विषय भिन्नता :** अंक प्रदान करने की परंपरागत प्रणाली में अंक प्रदान करने की उच्चतम एवं निम्नतम सीमा विषय दर विषय बदलती है। उदाहरणार्थ, गणितीय विज्ञान में 0–100 की सीमा का उपयोग अंक प्रदान करने में किया जाता है जबकि साहित्य में सीमा उचित रूप से 15–60 तक हो सकती है। इस प्रकार के अंकन में गणित और अंग्रेजी साहित्य में 60 अंक प्राप्त करने का समान अर्थ नहीं हो सकता है। अतः विषयों में अंकों की सीमा में इन विविधताओं के कारण, विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों के अंकों की तुलना करना मुश्किल हो जाता है। उदाहरणार्थ, एक विद्यार्थी गणित में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करता है उसे साहित्य में 60 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी से श्रेष्ठ नहीं माना जा सकता है।

संक्षेप में, हम तीन गंभीर त्रुटियाँ इस परंपरागत अंक प्रणाली में पाते हैं, वे हैं:

- मानवीय योग्यता का सूक्ष्म एवं वैकल्पिक मापन प्राप्त करने के बारे में गलत पूर्वानुमान;
- अंकन में विस्तृत अंतःपरीक्षक विभिन्नताएँ; और
- विभिन्न विषयों के बीच स्कोर की तुलनीयता की असत्यता।

11.4.2 ग्रेडिंग के लाभ

ग्रेडिंग प्रणाली का नूतन नवाचार मानवीय गुणवत्ता का सूक्ष्मता से मापने की हमारी अयोग्यता का परिणाम है। अंकों के विपरीत ग्रेड विषयों की भिन्नता से प्रभावित नहीं होते हैं। ग्रेडिंग के कुछ मुख्य लाभों को संक्षेप में नीचे कुछ पंक्तियों में दिया गया है:

i) अंकन की अपेक्षा ग्रेडिंग अधिक सूक्ष्म एवं तार्किक है क्योंकि 0–100 का पैमाना घटकर 5 बिन्दु, 7 बिन्दु या 9 बिन्दु का पैमाना हो गया है। यह मानव की योग्यता का समग्र आँकलन प्रदान करता है।

ii) बहुत सूक्ष्म पैमाना होने के कारण, समान सत्रीय कार्य की ग्रेडिंग में परीक्षक की परिवर्तनशीलता से उत्पन्न होने वाली त्रुटि न्यूनतम हो जाती है।

iii) विषय परिवर्तनशीलता के कारण होने वाली त्रुटि न्यूनतम होती है क्योंकि ग्रेडिंग विभिन्न विषयों में ग्रेडों के मान में असमानता को कम कर देती है।

11.4.3 इग्नू में ग्रेडिंग प्रणाली

इग्नू में अधिगमकर्त्ताओं की उपलब्धियों को मापने के लिए ग्रेडिंग प्रणाली को अपनाया गया है। यह पाँच अक्षरों वाली (A, B, C, D, E) ग्रेडिंग प्रणाली को अपनाता है जिसमें A उच्चतम ग्रेड और E न्यूनतम ग्रेड है। एक विद्यार्थी से सत्रीय कार्यों और सत्रांत परीक्षा में कम से कम D ग्रेड प्राप्त करना अपेक्षित है। हालाँकि, पाठ्यक्रम पूर्ण होने के लिए ग्रेड का समग्र औसत C होना जरूरी है। इन ग्रेडों के दिए गए मान निम्नलिखित सारणी में दिए गए हैं।

सारणी 11.1: इग्नू में ग्रेडिंग प्रणाली

अक्षर ग्रेड	ग्रेड बिन्दु	गुणात्मक स्तर	बिन्दु सीमा	समान प्रतिशत सीमा
A	5	अति उत्तम	4.50 और अधिक	80 प्रतिशत और अधिक
B	4	बहुत अच्छा	3.50 – 4.49	60 प्रतिशत से 79.9 प्रतिशत
C	3	अच्छा	2.50 – 3.49	50 प्रतिशत से 59.9 प्रतिशत
D	2	संतोषजनक	1.50 – 2.49	40 प्रतिशत से 49.9 प्रतिशत
E	1	असंतोषजनक	1.49 से कम	40 प्रतिशत से कम

इन ग्रेड बिंदुओं से भिन्न, यदि कोई विद्यार्थी कोई प्रयास नहीं करता है या उसके द्वारा दिया गया उत्तर पूर्णतः गलत है तो उसे "0" शून्य ग्रेड बिन्दु दिया जाता है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) ग्रेडिंग प्रणाली के क्या लाभ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

हालाँकि, यह कहना मुश्किल है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में किया जा रहा वर्तमान सतत् एवं व्यापक आँकलन पूर्णतः समग्र है। इस संदर्भ में हम सतत् आँकलन के वैकल्पिक तरीकों पर दृष्टिपात कर सकते हैं जो दूरस्थ शिक्षा में उपयोग के लिए विचारणीय हो सकते हैं। हम इन पर भाग 11.5 में चर्चा करेंगे।

11.5 सतत् आँकलन के वैकल्पिक एवं नए तरीके

सतत् आँकलन की वर्तमान प्रणाली (भाग 11.3 को देखें) अध्यापक द्वारा अंकित एवं कम्प्यूटर द्वारा अंकित सत्रीय कार्यों पर आधारित है जो शिक्षण की अपेक्षा और अधिगम की उपलब्धि के बीच के अंतर को कम करने के अभीष्ट उद्देश्य को पूर्ण नहीं करता है। इसके मुख्य कारण इस प्रकार हैं: i) तथ्य जो समय सीमा का अधिगमकर्त्ताओं पर अनावश्यक दबाव बनाता है, विशेषतः जब प्रणाली उन्हें वहीं कार्य को अपनी गति से करने को कहते हैं; ii) सत्रीय कार्य मुख्यतः एक शिक्षण युक्ति है और बाद में एक जाँच युक्ति; और iii) प्रणाली में विद्यार्थी द्वारा सीखे गए या उपलब्ध तथ्यों का लाभ उठाने में उनकी सहायता करने के लिए कुछ भी नहीं है।

इसके अतिरिक्त, यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि सत्रीय कार्यों के अंकों एवं ग्रेडों के संदर्भ में विद्यार्थी की प्रगति को दर्ज करने की वर्तमान प्रणाली एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत नहीं करती है कि विद्यार्थी ने क्या सीखा है और क्या नहीं। इसलिए, सतत् आँकलन के विकल्प पर विचार करना संदर्भ से परे नहीं है।

11.5.1 वैकल्पिक सतत् आँकलन क्या है?

वैकल्पिक आँकलन विस्तृत रूप से तृतीयक स्तर पर शिक्षा की प्रभावशीलता का आँकलन करने में प्रयुक्त किया जा चुका है। वैकल्पिक आँकलन के मुख्य लक्षण हैं अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के मूल्यांकन में उनकी सक्रिय भागीदारी और परावर्ती चिंतन का विकास। वैकल्पिक आँकलन की सफलता निष्पादित किए जाने वाले कार्यों पर निर्भर करता है जो दिखाता है कि अधिगमकर्त्ता क्या कर सकते हैं? वैकल्पिक आँकलनों में निबंध, निष्पादन का आँकलन, मौखिक प्रस्तुतियाँ, निरूपण और पोर्टफोलियो को शामिल किया जा सकता है। वैकल्पिक आँकलन को प्रायः विद्यार्थियों के निष्पादन के निर्णय के अपरंपरागत उपागमों की उपयोगिता के रूप में समझा जाता है (केवलसिकीन एवं अनुसीन, 2007)।

परंपरागत एवं वैकल्पिक आँकलन के बीच अंतरों को डोग्लस ब्राउन (2003, केवलसिकीन एवं अनुसीन, 2017 में उद्धृत) में प्रदर्शित किया गया है जो नीचे सारणी में दिए गए हैं।

सारणी 11.2: परंपरागत एवं वैकल्पिक आँकलन की तुलना

परंपरागत आँकलन	वैकल्पिक आँकलन
एक बार, मानकीकृत परीक्षाएँ	सतत् दीर्घकालीन आँकलन
समयबद्ध, बहुविकल्पी प्रारूप	समयनिबद्ध, मुक्त उत्तर प्रारूप
असंदर्भित परीक्षण पद	संदर्भित संवादात्मक कार्य
प्रतिपुष्टि के लिए पर्याप्त अंक	वैयक्तिक प्रतिपुष्टि और परिणाम
मानक संदर्भित अंक	मानदंड संदर्भित अंक
'सही' उत्तर पर केन्द्रित	मुक्त, सृजनात्मक उत्तर
योगात्मक	रचनात्मक
उत्पाद उन्मुख	प्रक्रिया उन्मुख
गैर-अंतःक्रियात्मक निष्पादन	अंतःक्रियात्मक निष्पादन
ब्राह्य प्रेरणा का पोषक	आंतरिक प्रेरणा का पोषक

अभ्यास में हम ध्यान दे सकते हैं कि परंपरागत और वैकल्पिक आँकलन के बीच सामान्यतः आँकलन के कई रूप आते हैं और कुछ दोनों से सर्वोत्तम को जोड़ते हैं जिन्हें हम भाग 11. 3 में चर्चित सतत् आँकलन के वर्तमान प्रणाली से चुनते हैं।

सतत् आँकलन के वैकल्पिक उपागम में सत्रीय कार्य पर उत्तीर्ण होने के लिए दिए गए ग्रेड या प्रतिशत विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किए विशिष्ट स्तर पर निर्भर करता है। विशिष्टतः इसे शिक्षण एवं अधिगम के बीच कम से कम अंतराल रखने के क्रम में इसे अत्यधिक उच्च निर्धारित किया गया है। परंतु इस उपागम में विद्यार्थियों को अपनी प्रगति की दर स्वयं निर्धारित करना स्वीकृत है और दी गई जाँच पर उत्तर देने के लिए उन्हें तैयार करते समय स्वयं निर्णय लेने की स्वीकृति है। बिन्दु यह है कि विभिन्न योग्यताओं वाले विद्यार्थी एक दिए गए स्तर को प्राप्त करने में अलग-अलग समय लेते हैं तथा उन्हें अलग-अलग समर्थन की आवश्यकता होती है जबकि कुछ ऐसे होते हैं जो विशिष्ट स्तर को प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए विद्यार्थी का प्रोफाइल उन क्षेत्रों की पहचान करने के लिए विशिष्ट प्रकार से विकसित हो जिसमें वे इच्छित विशिष्ट स्तर को प्राप्त कर लें। जब वे विश्वस्त अनुभव करते हैं कि वे अपनी कमजोरियों का उपचार कर लें तब वे उन्हीं सत्रीय कार्य से एक वैकल्पिक तरीका अपनाने के लिए मुक्त होते हैं। जब तक वे इच्छित स्तर को प्राप्त नहीं कर लेते तब तक यदि आवश्यक हो तो इस उपचारी चक्र को एक से अधिक बार दोहराया जाए। इस तरह के उपागम में प्राथमिक संबद्ध न केवल प्राप्त स्कोर से है बल्कि विद्यार्थी ने निष्पादन को इच्छित स्तर अंततः प्राप्त कर लिया है या नहीं इससे भी है। इस प्रकार, वैकल्पिक आँकलनों के उपयोग का उद्देश्य जटिल कार्यों को करने में विद्यार्थी की क्षमता का आँकलन करना है जो प्रत्यक्षतः अधिगम उद्देश्य से संबद्ध है जिसे आँकलन की वर्तमान प्रणाली पर्याप्तता से प्रदान नहीं करती है।

इस प्रकार के उपागम के प्रमुख लाभ हैं :

i) यह जो पढ़ाया गया है और जो सीखा गया है के बीच अंतराल को कम करने पर ध्यान केन्द्रित करता है और इस प्रकार के अंतरालों को समाप्त करने के साधन और तरीकों पर ध्यान देता है;

ii) यह विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों को उनकी विभिन्न विशेष आवश्यकताओं एवं अपेक्षित उपचारी सहायता के अनुसार व्यवहार करने की आवश्यकता की ओर अग्रसरित होता है।

iii) यह सुनिश्चित करता है कि अधिगमकर्त्ताओं के पास ज्ञान और विशिष्ट कौशलों के मानकों को प्राप्त करने के प्रत्येक अवसर हों; और

iv) यह उस तथ्य की सराहना करता है कि विभिन्न विद्यार्थी एक दिए गए पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं की विशेषज्ञता प्राप्त करने में अलग-अलग समय लेंगे।

वैकल्पिक आँकलन उस सीमा तक ध्यान में लेने में लाभप्रद है जहाँ तक विद्यार्थी विशिष्ट परिक्षेत्र को प्राप्त करने में सक्षम हैं और विचार करता है कि क्या किन्हीं मानकों को परिष्कृत करने की आवश्यकता है जो पहले से स्थापित हैं। यह विद्यार्थियों के उच्च स्तर के चिंतन कौशलों का आँकलन करने में भी सहायता करता है। विद्यार्थी अपने सीखे हुए को दिखाने को बेहतर अवसर प्राप्त करते हैं। यह सभी केवल वैकल्पिक आँकलनों से ही संभव है।

इस प्रकार के आँकलन के उपकरण विद्यार्थी की वृद्धि और निष्पादन पर केन्द्रित होते हैं। जैसे यदि एक विद्यार्थी एक दिए गए कार्य को एक निश्चित समय में करने में असफल होता है तो वे उसके पास अपनी योग्यता को भिन्न समय एवं भिन्न परिस्थिति में दिखाने का अवसर होता है। चूँकि वैकल्पिक आँकलन एक परिदृश्य और लम्बे समय में विकसित हुआ है अतः एक अध्यापक के पास विभिन्न क्षेत्रों एवं परिस्थितियों में विद्यार्थी की शक्ति एवं उसकी कमजोरी को मापने का अवसर होता है (लॉ एवं इकीस, 1995)।

वैकल्पिक आँकलनों की रचना के लिए दिशा-निर्देश : ये दिशानिर्देश इस प्रकार हैं: (http://ctl.byu.edu/using-alternative-assessments)

- विषयवस्तु एवं कौशलों के समुच्चय एवं परिक्षेत्रों जिन्हें विद्यार्थियों को प्रदर्शित करना चाहिए उन दोनों के संदर्भ में आप जिस निर्देशात्मक उद्देश्य का आँकलन जहाँ तक संभव हो स्पष्टता से करना चाहते हैं उसको स्पष्ट करें।
- उन उद्देश्यों के बीच अंतर करें जिसका अकेले निष्पादन के आँकलनों द्वारा वैधतापूर्वक आँकलन हो सके और वे जो उद्देश्य मानकों द्वारा प्रभावी ढ़ंग से आँकलित हो सकें।
- कार्यों का सृजन करें जो निर्धारित कौशल के निष्पादन की योग्यता के साक्ष्य को प्रकाश में लाएँ।
- निर्णय करें कि अध्यापक द्वारा किस प्रकार के निर्देश प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जब विद्यार्थियों को स्वतंत्रतापूर्वक और उन्हें अपने तरीके से करने की स्वीकृति दी जाती है।
- आँकलन को आजमाएं और जैसी आवश्यकता हो संशोधन करें।

सतत् आँकलन के ये विभिन्न वैकल्पिक तरीके हैं जिसे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अपनाने के लिए दूरस्थ शिक्षाविद् विचार कर सकते हैं।

11.5.2 रूब्रिक

इस उपभाग में, आप समझेंगे कि कैसे रूब्रिक विद्यार्थी के निष्पादन के आँकलन के वैकल्पिक तरीके के रूप में कार्य करता है।

रूब्रिक क्या है?

रूब्रिक विद्यार्थी के उत्पादों एवं निष्पादनों का आँकलन करने के लिए एक बहुविकल्पी अंकन निर्देशिका होती है। रूब्रिक शिक्षण को सुधारने, स्वस्थ आँकलन करने में योगदान देता है, और कार्यक्रम में सुधार के लिए सूचना के एक स्रोत के रूप में कार्य करता है (वोल्फ एवं स्टीवन्स, 2007)। "आँकलन के लिए रूब्रिक प्रायः मैट्रिक्स या ग्रिड के रूप में प्रयुक्त होने

वाला एक उपकरण है जो परिक्षेत्र एवं मानकों के संदर्भ में विद्यार्थियों के कार्य की व्याख्या और ग्रेड प्रदान करने के लिए प्रयुक्त हुआ है। एक रूब्रिक आँकलन परिक्षेत्र एवं अपेक्षित निष्पादन मानकों की एक स्पष्ट सीमा बनाता है। रूब्रिक को कभी-कभी "परिक्षेत्र सीट", "ग्रेडिंग योजना" या "स्कोरिंग गाइड" कहा जाता है।" (https://teaching.unsw.edu.au/assessment-rubrics)। रूब्रिक अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए एक गाइड के रूप में कार्य करता है। उदाहरणार्थ, विद्यार्थियों के लिए यह उनके निष्पादन का स्व-आँकलन करने के लिए एक गाइड के रूप में कार्य करता है और यह भी जानता है कि क्या अपेक्षा है और एक अध्यापक किस प्रकार उसके सत्रीय कार्य पर ग्रेडिंग करेंगे। यह उन्हें उनके सत्रीय कार्य पूर्ण करने में भी निर्देश देता है। दूसरी तरफ, अध्यापक द्वारा इसका उपयोग एक सत्रीय कार्य या पाठ्यक्रम में विद्यार्थी के कार्य का आँकलन करने में किया जाता है और उनकी ग्रेडिंग की सोद्देश्यता या निष्पक्षता सुनिश्चित करता है।

रूब्रिक निर्माण या विकास

उन विभिन्न परिक्षेत्रों का निर्धारण करने में समय लगता है जिसके आधार पर आप एक विद्यार्थी के सत्रीय कार्य का आँकलन करना चाहते हैं और एक रूब्रिक बनाना चाहते हैं, किन्तु यह बाद में समय बचाएगा जब आप उन्हें ग्रेड देंगे। रूब्रिक प्रायः एक सारणी के प्रारूप में प्रस्तुत किया जाता है। यदि किसी विशेष गतिविधि/श्रेणी/उद्देश्य को विद्यार्थियों द्वारा उच्चतम से न्यूनतम प्रवीणता के अंक के साथ पूरा किया जा रहा है या नहीं, का मूल्यांकन या मापन के लिए विभिन्न परिक्षेत्र प्रयुक्त होते हैं। विद्यार्थियों के कार्य को अधिक से कम वाले (1–5 बिन्दु) पैमाने से ग्रेड दिया जाता है (जैसे अति उत्तम – असंतोषजनक)। विद्यार्थी रूब्रिक का मुद्रण अपने अधिगम का हिसाब रखने के लिए ले सकते हैं। (http://elearningfacultymodules. org/index.php/Rubrics)

रूब्रिक के विकास में निम्नलिखित चरण सम्मिलित हैं: i) निष्पादन परिक्षेत्र को चिहिन्त करना, ii) निष्पादन का स्तर निश्चित करना, iii) निष्पादन के विवरण सृजित करना, iv) एक अस्थायी रूब्रिक में विवरणों का आयोजन, और v) परिक्षेत्र का मूल्यांकन करना एवं संशोधन करना।

उदाहरणार्थः आप रूब्रिक के प्रकारों एवं प्रारूपों को नीचे देख सकते हैं:

रूब्रिक के प्रकार

रूब्रिक कुछ परिक्षेत्र के साथ *सामान्य,* या एक स्कोर जोड़ने वाले कुछ परिक्षेत्र के साथ *जटिल* हो सकती है। रूब्रिक, *सरलीकृत* एवं विस्तृत हो सकती है। यह *सामान्य* या *कार्य -विशेष* हो सकती है। दूसरे शब्दों में, रूब्रिक को प्रायः दो विभिन्न पहलुओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है – *आँकलन परिक्षेत्र* और *निष्पादन के कार्य।*

क) ***आँकलन परिक्षेत्र पर आधारित प्रकार :*** आँकलन परिक्षेत्र पर आधारित रूब्रिक दो प्रकार की होती हैं: समग्र एवं विश्लेषणात्मक।

i) समग्र रूब्रिक : ये रूब्रिक हैं :

- एक मात्र मानदंड वाले रूब्रिक (एक आयामी) जो विद्यार्थी का एक गतिविधि पर समग्र आँकलन के लिए उपयोग किया जाता है, या पूर्व निर्धारित उपलब्धि के स्तरों के मद पर आधारित।
- निष्पादन के विवरण अनुच्छेद में लिखे जाते हैं और प्रायः पूर्ण वाक्यों में होते हैं।

यदि आप एक विद्यार्थी द्वारा एक समूह को दिया गया भाषण का आँकलन कर रहे हैं और एक समग्र रूब्रिक को अपनाने का इरादा रखते हैं तो आप निम्नलिखित को उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं।

सारणी 11.3: समग्र रूब्रिक का एक उदाहरण

मानदंड	बिन्दु				
	5	4	3	2	1
आयोजन और प्रस्तावित प्रारूप का उपयोग					
विषय वस्तु					
स्रोत सामग्रियों का एकीकरण					
व्याकरण एवं यांत्रिकी					
अंतर्दृष्टि और विचार					
टिप्पणियाँ:					
अंतिम ग्रेड:					
1 = उपस्थित नहीं, **2** = संशोधन आवश्यक, **3** = संतोषजनक, **4** = दृढ़ **5** = अति उत्तम					

ii) विश्लेषणात्मक रूब्रिक : ये रूब्रिक हैं :

- द्विआयामी रूब्रिक जिसमें उपलब्धियों का स्तर स्तंभ में और आँकलन मानदंड पंक्ति में होता है। यह आपको एकमात्र रूब्रिक का उपयोग करते हुए बहुगुणित मानदंडों के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धियों का आँकलन करने की स्वीकृति देता है। आप विभिन्न मानदंडों को विभिन्न मूल्य (मान) दे सकते हैं और मानदंडों का योग कर समग्र उपलब्धि को जोड़ सकते हैं।
- एक सारणी के रूप में लिखे जाते हैं।

उदाहरणार्थ, एक दिए गए विषय पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति का आँकलन करने के लिए आप एक विश्लेषणात्मक रूब्रिक का उपयोग कर सकते हैं, जैसा नीचे एक दिया गया है।

सारणी 11.4: एक विश्लेषणात्मक रूब्रिक का उदाहरण

	अत्युत्तम (अपेक्षाओं से अधिक) 17-20	बहुत अच्छा (अपेक्षा तक) 13-16	औसत (अपेक्षाओं के नजदीक) 9-12	औसत से नीचे (अपेक्षाओं से कम) 5-8	खराब (बहुत असंतोषजनक) 0-4	संपूर्ण योग
स्वरूप–20						
ज्ञान–20						
अनुप्रयोग–20						
प्रस्तुति–20						
प्रक्रिया–20						

ख) ***निष्पादन कार्यों पर आधारित प्रकार :*** ये रूब्रिक दो प्रकार के होते हैं :

- *सामान्य :* यह एक परिवार या समान कार्यों के समूह के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं।
- *कार्य-विशिष्ट* : प्रत्येक कार्य के आँकलन के लिए प्रयोज्य।

एक रूब्रिक स्कोर करने का एक उपकरण है जो एक नियत कार्य या एक कार्य के लिए निष्पादन की अपेक्षाओं को स्पष्टतया पुनःप्रस्तुत करता है। रूब्रिक प्रस्तावित कार्य को घटकों

में विभाजित करता है और प्रत्येक घटक को संबद्ध कार्य के अभिलक्षणों का स्पष्ट विवरण प्रदान करता है।

विभिन्न प्रकार के रूब्रिक के लाभों एवं नुकसानों को सारांश के रूप में नीचे दिया गया है।

सारणी 11.5: विभिन्न प्रकार के रूब्रिक के लाभ एवं हानियाँ

रूब्रिक के प्रकार	परिभाषा	लाभ	हानियाँ
समग्र या विश्लेषणात्मक : एक या कई निर्णय?			
समग्र	सभी मानदंड (आयाम) लक्षण साथ-साथ मूल्यांकित होते हैं।	• विश्लेषणात्मक रूब्रिक की अपेक्षा स्कोरिंग तीव्रता से होती है। • अंतःनिर्धारक विश्वसनीयता प्राप्त करने में कम समय लगता है। • योगात्मक आँकलन के लिए अच्छा है।	• समग्रतः एक स्कोर सुधार के बारे में सूचना संप्रेषित नहीं करता है। • रचनात्मक आँकलन के लिए अच्छा नहीं है।
विश्लेषणात्मक	प्रत्येक मानदंड (आयाम) लक्षण अलग-अलग मूल्यांकित होते हैं।	• अध्यापक को निदानात्मक सूचना देता है। • विद्यार्थियों को रचनात्मक प्रतिपुष्टि देता है। • समग्र रूब्रिक की अपेक्षा सूचना को जोड़ना सरल है। • रचनात्मक आँकलन के लिए अच्छा है। • योगात्मक आँकलन के लिए अपनाने योग्य है, यदि आपको ग्रेडिंग के लिए एक समग्र स्कोर की जरूरत है तो आप स्कोरों को जोड़ सकते हैं।	• स्कोर करने में समग्र रूब्रिक की अपेक्षा अधिक समय लेता है। • समग्र रूब्रिक की अपेक्षा अंतर्विश्वसनीयता प्राप्त करने में अधिक समय लेता है।
निष्पादन का विवरण : सामान्य या कार्य-विशिष्ट			
सामान्य	कार्य का विवरण अभिलक्षण देता है तो समस्त कार्य-परिवार पर लागू होता है। (जैसे लेखन, समस्या-समाधान)	• आँकलन एवं अनुदेश को स्पष्टता से जोड़कर विद्यार्थियों के साथ साझा कर सकता है। • उसी रूब्रिक का कुछ कार्यों या नियत कार्यों के साथ पुनः उपयोग कर सकते हैं। • विद्यार्थी एक कार्य की अपेक्षा अच्छे कार्य को बड़ा समझने में सहायता कर अधिगम को समर्थ बनाता है, • विद्यार्थियों के स्व-मूल्यांकन को मदद करता है। • सामान्य रूब्रिक बनाने में विद्यार्थियों की मदद कर सकता है।	• कार्य-विशिष्ट रूब्रिक की अपेक्षा कम विश्वसनीयता। • अच्छी तरह लागू करने के लिए अभ्यास अपेक्षित है।
कार्य-विशिष्ट	कार्य का विवरण किसी विशिष्ट कार्य की विशिष्ट सामग्री को संदर्भित करता है। (जैसे एक उत्तर देना, एक निष्कर्ष निर्दिष्ट करना)।	• अध्यापक कभी-कभी कहते हैं इसका उपयोग कर स्कोर देना आसान है। • अंतःनिर्धारक विश्वसनीयता प्राप्त करने के लिए कम समय अपेक्षित है।	• विद्यार्थियों के साथ साझा नहीं कर सकते हैं। • प्रत्येक कार्य के लिए रूब्रिक लिखने की आवश्यकता है। • मुक्तांत कार्यों के लिए रूब्रिक में अच्छा उत्तर सूचीबद्ध नहीं किए गए तो बुरा मूल्यांकन हो सकता है।

स्रोतः सुसेन एम. ब्रुकचार्ट एवं एंथनी जे. निटको (2008)।

जैसा कि आप सारणी 11.5 से देख सकते हैं, प्रत्येक प्रकार के रूब्रिक के अपने लाभ एवं नुकसान हैं, और आपको निर्णय लेना होगा कि कौन-सा रूब्रिक आपके उद्देश्य के लिए उपयुक्त है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में रूब्रिक के उपयोग : एक बार जब आप विद्यार्थियों को रूब्रिक के विचार से परिचित करा देते हैं तो आप रूब्रिक डिजाइन प्रक्रिया में उनकी मदद कर सकते हैं। इस प्रकार, वे किसी नियत कार्य के सम्बन्ध में अपने अधिगम के लिए अधिक उत्तरदायित्व लेते हैं। इस प्रकार, रूब्रिक अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए लाभप्रद है क्योंकि वे एक पारदर्शी, स्पष्ट उद्देश्य देते हैं और शिक्षा में एक उचित आँकलन उपकरण देते हैं। इसलिए आप विविध शिक्षण-अधिगम परिस्थितियों एवं मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में विविध गतिविधियों में शिक्षार्थियों के निष्पादन के मूल्यांकन में रूब्रिक का उपयोग कर सकते हैं। आप रूब्रिक का उपयोग चित्रकला, चार्ट और टेक्स्ट का आँकलन करने में कर सकते हैं जैसा कि स्वअनुदेशित मुद्रित सामग्रियों में है। उसी प्रकार, आप इनका उपयोग परियोजना या मल्टी मीडिया गतिविधियों का सत्रीय कार्य का आँकलन करने में कर सकते हैं। किसी वेब 2.0 के उपयोग के आँकलन में भी उपयोग कर सकते हैं, उदाहरणार्थ – एक ब्लॉग जिसमें संभावनाओं का अद्भूत समुच्चय है जैसे हाइपर टेक्स्ट, इम्वेडेड वीडियो आदि।

11.5.3 परियोजना

एक परियोजना अंतर्संबद्ध कार्यों का एक नियोजित समुच्चय है जो एक निश्चित समयावधि में कार्यान्वित होना होता है और निश्चित सीमाओं में होना होता है। शैक्षणिक संस्थाओं या विश्वविद्यालय में एक परियोजना एक शोध नियत कार्य है जिसे बहुत अधिक प्रयास और विद्यार्थी द्वारा अधिक स्वतंत्र कार्य अपेक्षित है। विद्यार्थी कार्य को एक स्वीकृत मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक के पर्यवेक्षण में आगे बढ़ाता है। विद्यार्थी अपनी पसंद का एक शीर्षक चिह्नित करता है और उपयुक्त उपकरणों एवं तकनीकों द्वारा प्राथमिक आँकड़े संग्रह करने लगता है या तो पुस्तकालय या इंटरनेट से द्वितीयक आँकड़ों के माध्यम से तथ्य खोजते हैं। परियोजना की लिखित रिपोर्ट प्रायः एक शोध के रूप में होती है जिसमें परियोजना की संकल्पना, प्रविधि, विश्लेषण, खोज और सारांश और सुझावों को आवृत करने वाले भाग होंगे।

एक विद्यार्थी की व्यक्तिगत योग्यता के सतत् आँकलन का एक वैकल्पिक साधन है परियोजना, जिसे वह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से किए जाने वाले किसी पाठ्यक्रम या कार्यक्रम के एक हिस्से पर निर्धारित किए गए कार्य को करता है।

11.5.4 खुली पुस्तक परीक्षा

खुली पुस्तक परीक्षा वह है जिसमें परीक्षक परीक्षा के दौरान उत्तर लिखने के लिए क्लास नोट, पाठ्यपुस्तकों, स्व-अनुदेशन मुद्रित सामग्रियों और अन्य स्वीकृत सामग्रियों से सहयोग लेने की स्वीकृत परीक्षार्थियों को देता है। एक खुली पुस्तक परीक्षा में ऐसे प्रश्न पूछने निरर्थक हैं जिसे प्रत्यक्षतः पाठ्यपुस्तक या अन्य सार्थक सामग्रियों से उत्तर पुस्तिका में नकल किया जा सकता है। परीक्षा कक्ष में पाठ्यपुस्तकों या अन्य सामग्रियों की उपलब्धता होने पर अध्यापक ऐसे प्रश्न नहीं पूछेंगे जिसका उत्तर सीधे-सीधे पाठ्यपुस्तक से लेकर उत्तर पुस्तिका में लिख दी जाए। जबकि बिना पुस्तक वाली परीक्षा रटे हुए अधिगम की जाँच के लिए उपयुक्त हैं जो परोक्ष एवं स्थायी स्मृति को शामिल करता है। खुली पुस्तक परीक्षा का प्रभावी उपयोग सक्रिय स्मृति के उपयोग में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने में होता है। तथापि, ये परीक्षाएँ उद्देश्य के आधार पर चुनी जानी अपेक्षित है।

हम जानते हैं कि रटन्त अधिगम बहुत से अधिगमकर्त्ताओं में वर्षों से एक आवश्यक बुराई के रूप में बिना पुस्तक के परीक्षा द्वारा पोषित हुआ है। इसको दूर करना बहुत मुश्किल है क्योंकि खुली पुस्तक परीक्षा के साथ व्यावहारिकताएँ जुड़ी हुई हैं। यदि परीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों द्वारा याद की गई सूचना की जाँच करता है, जो खुली पुस्तक परीक्षा अनुपयुक्त है, चूँकि विद्यार्थी आसानी से सूचना को किताब या नोटबुक में से परीक्षा पुस्तिका में लिख देते हैं। मान लीजिए, परीक्षा में सूचना आधारित प्रश्न जैसे ''सापेक्षता के सिद्धान्त का आविष्कार किसने किया''? या ''मानक विचलन 'की व्याख्या' कीजिए'' जैसे प्रश्न पूछे जाते हैं तो विद्यार्थी आसानी से इनका उत्तर पाठ्यपुस्तक या नोटबुक से खोज सकते हैं और उनको अपनी उत्तरपुस्तिका में नकल कर सकते हैं। दूसरी तरफ, यदि परीक्षा समस्या-समाधान, महत्वपूर्ण चिंतन कौशलों की जाँच करती हैं तो विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक या नोटबुक की सहायता लेने में कोई बुराई नहीं है। यदि विद्यार्थी के सारांश का आँकलन करना है जिसमें निर्णायक रूप से उसकी मानक विचलन की संकल्पना शामिल है तो पाठ्यपुस्तकें क्या कह रही हैं कोई मायने नहीं रखता (के.पी. मोहनन http://www.iiserpune.ac.in/~mohanan/educ/ openbook.pdf)।

कहने की आवश्यकता नहीं कि अप्रत्यक्ष समस्या समाधान प्रश्न जो विद्यार्थियों की चिंतन कौशल की जाँच करता है तो बिना पुस्तक वाली परीक्षा में उपयोग किया जा सकता है। इसलिए, एक बहस खड़ी होती है कि खुली पुस्तक परीक्षा को स्थापित करना है या फिर सही प्रकार के सवालों को तैयार करना। लेकिन इसे हल करने के बजाय विवाद साथ रहने के लिए एक तर्क हो जाएगा। बिना पुस्तक परीक्षा एवं खुली पुस्तक परीक्षा के बीच अनिवार्य अंतर है कि पहले का उपयोग इस लिए किया जा सकता है कि विद्यार्थियों ने कितना याद किया है जबकि बाद वाली परीक्षा नहीं कर सकती। यदि हम याद की गई सूचना की जाँच करने की रूचि नहीं रखते हैं तो फिर बिना पुस्तक की परीक्षा क्यों उपयोग करें?

खुली पुस्तक परीक्षा के प्रकार

खुली पुस्तक परीक्षा के दो प्रकार हैं : प्रतिबंधित एवं अप्रतिबंधित।

प्रतिबंधित प्रकार की खुली पुस्तक परीक्षा में विद्यार्थी को पाठ्यक्रम निर्देशक की सहमति से एक या अधिक विशिष्ट *अभिलेख* परीक्षा कक्ष में लाने की अनुमति होती है। विद्यार्थियों को छपे हुए अभिलेख जैसे लॉग टेबल, शब्दकोश या शेक्सपीयर का पूर्ण कार्य लाने की अनुमति दी जाती है परंतु हस्तलिखित अभिलेख या बिना पूर्व अनुमति के छपे हुए अभिलेख लाने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक को सुनिश्चित भी करना है कि जो छपी हुई सामग्री विद्यार्थी ला रहे हैं उनमें हाशिए पर कुछ भी लिखा नहीं है। इस प्रकार की परीक्षा में स्वीकृत सामग्री कम या अधिक स्वयं प्रश्नपत्र में छपे अनुसूची के रूप में होती है।

अप्रतिबंधित प्रकार की खुली पुस्तक परीक्षा में विद्यार्थी जो कुछ भी चाहे लाने को स्वतंत्र होते हैं। इसमें कोई प्रतिबंध नहीं होता कि विद्यार्थी क्या ला रहे हैं। वे कोई भी पुस्तक ला सकते हैं, पाठ्यक्रम निर्देशिका व्याख्यान पत्र या अपनी लिखी नोटबुक ला सकते हैं। इस प्रकार की परीक्षाओं का उपयोग पहले से निश्चित शिक्षण रणनीतियों एवं प्रश्नों के प्रकार होता है। विशेष रूप से, यह माँग करता है कि पाठ्यक्रम बजाय सूचना विषयवस्तु पर, बौद्धिक कौशलों के एक समुच्चय पर केन्द्रित करता है और कोई भी प्रतिबंधित विषयवस्तु आधारित प्रश्न परीक्षा में नहीं पूछा जाता है। यदि पाठ्यक्रम निर्देशक ने वतर्मान में प्राप्त ज्ञान पर केन्द्रित किया है और प्रश्नपत्रों में विषयवस्तु आधारित परंपरागत प्रश्न जैसे "ब्रिटिश एवं अमेरिकन अंग्रेजी के बीच अंतर पर निबंध लिखें" आदि शामिल हैं तो अप्रतिबंधित खुली पुस्तक परीक्षा भयावह होगी। दूसरे शब्दों में, खुली पुस्तक परीक्षा दे रहे विद्यार्थियों को किसी

भी प्रकार की सामग्री जो वे लाए हैं को सलाह लेने को कहना निरर्थक होगा, यदि प्रश्नपत्रों को इस तरह से डिजाइन किया गया है तो इनका उत्तर किसी पाठ्यपुस्तक या कक्षा नोट में नहीं मिलेगा। एक तेज विद्यार्थी जिसने इस तरह की परीक्षा का अनुभव पहले एक बार किया हो तो वह अगली परीक्षा में ऐसी कोई सामग्री नहीं लाएगा, क्योंकि यह जानता है कि तैयार की गई सामग्री का कोई उपभोग नहीं होगा। इस प्रकार की परीक्षा तब प्रतीकात्मक इशारा के रूप में कार्य करती है जो पाठ्यक्रम और परीक्षा की प्रकृति का अनुभव करते हैं और उन्हें पढ़ने का झटका देते हैं और वे नकल में सम्मिलित नहीं होते हैं।

खुली पुस्तक परीक्षा में भारतीय अनुभव : यह गौरतलब है कि सी.बी.एस.ई. ने कक्षा नौवीं और ग्यारहवीं की फाइनल परीक्षा में खुली पाठ्यपुस्तक आँकलन (OTBA) को सत्र 2013-14 में आँकलन के एक वैकल्पिक पद्धति (मोड) के रूप में अपनाया। सी.बी.एस.ई. ने इस उपागम को अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान कक्षा नौंवी एवं जीव विज्ञान, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, और भूगोल कक्षा ग्यारहवीं में लागू किया। सी.बी.एस.ई. ने खुली पाठ्यपुस्तक आँकलन (OTBA) पर प्रतिपुष्टि प्राप्त की और यह विकल्प तलाश रहा है कि खुली पाठ्यपुस्तक आँकलन (OTBA) को दूसरे अन्य विषयों में लागू किया जाए। प्रथम दृष्टया, विद्यार्थी, अध्यापक एवं अभिभावकों ने सी.बी.एस.ई. के खुली पाठ्यपुस्तक आँकलन (OTBA) की सराहना की, फिर भी यह अभी मूल्यांकित किया जाना है कि क्या उस योजना ने विद्यार्थियों के बीच स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित करने के लक्ष्य को प्राप्त किया या नहीं। (http://www.firstpost.com/living/open-book-exams-are-anice-(lEcU/khange-but-successful-implementation-needs-education-reform-2582726.html).

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान (ICAI) तीव्रता से पैटर्न को बदल रहा है जिसमें यह अपनी परीक्षाएँ आयोजित करता है; नवंबर 2015 और मई 2016 के पाठ्यक्रम में बदलाव आए हैं। अब यह अधिसूचित किया जाता है कि परीक्षाएँ खुली पुस्तक परीक्षा होगी, यह बदलाव मई 2017 से क्रियान्वित किया जाएगा। वर्तमान में परीक्षाएँ तीन स्तरों, सी.पी.टी, आई.पी.सी.सी. और उन्त परीक्षा पर आयोजित की जा रही है। हालाँकि, खुली पुस्तक परीक्षा केवल सी.ए. फाइनल के विद्यार्थियों के लिए होगी। यह केवल उन विद्यार्थियों पर लागू होगा जिन्होंने सी.पी.टी. और आई.पी.सी.सी. उत्तीर्ण कर लिया है।

खुली पुस्तक परीक्षा, चाहे प्रतिबंधित हो या अप्रतिबंधित, इनकी अपनी क्रियात्मक समस्याएँ हैं कि कौन सी सामग्री स्वीकृत है और कौन सा नहीं साथ ही साथ आँकलन यांत्रिकी की भी समस्याएँ हैं। खुली पुस्तक परीक्षा, अध्यापक, विद्यार्थी और आँकलन तीनों के दृष्टिकोण से शिक्षा को वास्तव में खुला बनाने का रास्ता तैयार कर रहा है। यह उपयुक्त शिक्षण एवं अधिगम रणनीतियों को अपनाने को भी कहता है। ये परिवर्तन अनिवार्य होंगे। तथापि, खुली पुस्तक परीक्षा की माँगों के अनुरूप अध्यापकों एवं विद्यार्थियों दोनों को अनुकूल होने में कुछ समय और प्रयास में लगेंगे।

लाभ एवं हानियाँ : खुली पुस्तक परीक्षा के निम्नलिखित लाभ एवं नुकसान हैं।

लाभ : इनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

- इसमें स्मृति के लिए कम जगह है क्योंकि खुली पुस्तक परीक्षा के लिए विद्यार्थियों को लम्बे समय तक तथ्यों एवं आँकड़ों को याद रखने की आवश्यकता नहीं है।
- सामान्यतः उपयुक्त अधिगम सामग्रियों को पुनः याद करने या पुनर्लेखन की बजाय इनको संग्रह करने की प्रक्रिया तैयार करने के दौरान खुली पुस्तक परीक्षा विद्यार्थियों को ज्ञान अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है।

- यह पुस्तकों एवं अन्य स्रोतों से आवश्यक सूचना और आँकड़े प्राप्त करने के प्रभावी तरीकों का पता लगाने के माध्यम से विद्यार्थियों के कौशलों में सुधार की सूचना को प्रोन्नत करता है।
- यह विद्यार्थियों के कौशलों को संवेदित करता है और समझ को बढ़ाता है क्योंकि उन्हें परीक्षा के लिए पुस्तकों और अन्य अध्ययन सामग्रियों की विषयवस्तु को सरल एवं आसान नोटों में बदलने की आवश्यकता होती है।

हानियाँ : इनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं।

- यह सुनिश्चित करना मुश्किल है कि सभी विद्यार्थियों ने परीक्षा में अपने साथ जो सामग्री लाए हैं उससे पूरी तरह सुसज्जित हैं क्योंकि पुस्तकालय में पुस्तकें सीमित हो सकती हैं और कुछ बहुत महंगी भी हो सकती हैं।
- परीक्षा के दौरान इसमें विद्यार्थियों के लिए डेस्क पर अधिक जगह की आवश्यकता होती है क्योंकि विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों, टिप्पणियों एवं अन्य संदर्भ सामग्रियों के लिए अधिक जगह की आवश्यकता होती है।
- कभी-कभी विद्यार्थी अपने ज्ञान को लागू करने की बजाय पुस्तकों में उत्तर खोजने में बहुत अधिक समय व्यतीत कर देते हैं।
- अधिकांश व्यक्ति खुली पुस्तक परीक्षा से अपरिचित हैं। उन्हें स्पष्ट प्रक्रियाएँ एवं नियम अवश्य प्रदान किए जाने चाहिए।

उपर्युक्त अध्ययन से आप समझ सकते हैं कि बंद पुस्तक परीक्षा एवं खुली पुस्तक परीक्षा दोनों की कुछ अच्छाइयाँ एवं कमियाँ हैं जिसपर कभी समाप्त न होने वाली बहस होती है। तथापि, बहुत सी समस्याओं का समाधान करने के क्रम में दोनों परीक्षा प्रणालियों को अपनाने में विषमता है, ताकि जो समस्याएँ एवं मुद्दे शैक्षणिक संस्थानों (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों समेत) द्वारा परीक्षाओं के आयोजन में बाधा उत्पन्न करते हैं उनको दूर करने में प्रवीणता आती है।

11.5.5 सत्र-पत्र

सत्र-पत्र विद्यार्थियों द्वारा लिखा गया एक शोधपत्र है जिसमें ग्रेड एवं अंकों का हिसाब होता है। सत्र-पत्र एक घटना, एक अवधारणा या किसी बहस के लिए सामान्यतः अभीष्ट है। सत्र-पत्र मूलतः एक लिखा गया कार्य है जिसमें एक शीर्षक पर विस्तार में चर्चा होती है जो प्रायः कुछ पृष्ठों में अंकित होते हैं और प्रायः सेमेस्टर के अंत पर लिया जाता है। शोध पत्र और सत्र-पत्र एक-दूसरे से काफी हद तक जुड़े हुए हैं। सत्र-पत्र शब्द मूलतः एक लिखित नियत कार्य (प्रायः एक शोध आधारित पत्र) का वर्णित करता है और जो सत्र के अंत पर लिया जाता है, जो या तो एक सेमेस्टर या एक क्वार्टर होता है, निर्भर इस बात पर करता है कि किस इकाई का मापन प्रयुक्त किया जा रहा है। हालाँकि, सभी सत्र-पत्र शैक्षिक शोध को सम्मिलित नहीं करते हैं और सभी शोध पत्र सत्र-पत्र नहीं होते हैं।

वर्तमान समय में, समूचा व्यवसाय साहित्यिक चोरी, पूर्व लिखित सत्र-पत्र विद्यार्थियों को प्रदान करने में लग गया है जो शिक्षा के विविध स्तरों पर उपलब्ध कराया जाता है। बहुत सी वेबसाइट हैं जो सभी गुणवत्ता एवं लेखन क्षमता के सत्र-पत्र बेच रही है। परंतु, प्रायः इन पर शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा दावा किया जाता है कि यह विद्यार्थी की शैक्षिक ईमानदारी को गंभीर रूप से नष्ट कर रहा है। विद्यार्थी अनजाने में साहित्यिक चोरी में फँस भी सकते हैं (https://en.wikipedia.org/wiki/Term_paper)।

11.5.6 मुक्त चिह्न (Open Badges)

निर्गकर्त्ता द्वारा निर्धारित कार्यों एवं स्थापित लक्ष्यों को पूरा करके चिह्नों को प्राप्त किया जा सकता है जैसे एक अधिगम प्रदाता (जो सॉफ्ट कौशलों को प्राप्त करने के लिए चिह्न देता है) या वेबसाइट (ऑनलाइन कार्य को पूर्ण करने के लिए), मूलतः कोई एक जो प्रयोगकर्त्ता को प्रेरित रखना चाहता है। प्रयोगकर्त्ता द्वारा चिह्न प्राप्त करने के लिए जरूरी मानदंड जारीकर्त्ता द्वारा सृजित किया जाता है। यह चिह्न के अंदर मेटाडाटा के रूप में गठित रहता है, साथ ही चिह्न को किसने जारी किया, कब जारी किया, और समाप्ति अवधि या तिथि क्या है भी दर्ज होता है (https://www.jisc.ac.uk/blog/so-what-are-openbadges-28-aug-2013)।

मुक्त चिह्न संकल्पना को एक कदम आगे ले जाते हैं और विश्वस्त संगठनों के माध्यम से आपकी कौशलों, रूचियों और उपलब्धियों को सत्यापित करने की स्वीकृति आपको देता है, और उस सूचना को बैज इमेज फाइल के साथ जोड़ता है, जिसे मेटाडाटा की हार्ड कोडिंग हो जाता है जो भविष्य में पहुंच और समीक्षा के लिए होता है। क्योंकि प्रणाली एक मुक्त मानक पर आधारित है, अधिगमकर्त्ता बहुत से बैजों (चिह्नों) को जोड़कर अपनी उपलब्धि की कहानी को पूर्ण करता है या तो ऑनलाइन या ऑफलाइन। चिह्नों को अधिगमकर्त्ता द्वारा जहाँ चाहे दिखाया जा सकता है और रोजगार, शिक्षा या आजीवन अधिगम के लिए उन्हें साझा कर सकता है। (http://badges.thinkoutloudclub.com/modules/what/know/). इस प्रकार, एक विघटनकारी नवाचार के रूप में मुक्त चिह्न अधिगम को औपचारिक प्रणाली से अलग पहचान दिलाने के तरीके हैं। आज मुक्त चिह्न एक उभरती तकनीक है और व्यापक बाजार विकास तथा अपनाने के लिए आगे विकास की अपेक्षा करती है। मुक्त चिह्न अधिगम को पहचानने एवं सत्यापित करने का एक नया ऑनलाइन मानक है। मुक्त चिह्न व्यक्ति को उनके अधिगम को उनके साथ लेने के लिए सशक्त बनाता है, वे जहाँ भी जाते हैं वे अपने जीवन पर्यन्त अधिगम की एक समृद्ध तस्वीर बनाते चलते हैं।

मुक्त चिह्नों का अभ्यास

समस्त संसार में हजारों संस्थाएँ पहले से ही मुक्त चिह्न जारी कर रही हैं। अलाभकारी संस्थाओं से लेकर प्रमुख नियोक्ताओं से शैक्षिक संस्थानों तक सभी स्तरों पर ये जारी किए जा रहे हैं (https://openbadges. org/about/)।

मुक्त चिह्न संरचना (The Open badges Infrastructure (OBI): OBI मोजिला फाउंडेशन द्वारा विकसित की गई है और विकासकर्त्ताओं के एक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा इसे आकार प्रदान किया गया है जिसका उपयोग डिजिटल अवार्ड जारी करने, प्रदर्शित करने एवं अर्जित करने के लिए किया जा सकता है। मोजिला ने 2011 में मुक्त चिह्न सृजित किए, जो मालिकाना नहीं है, वे निःशुल्क सॉफ्टवेयर और एक मुक्त तकनीकी मानक का उपयोग करते हैं। इसका तात्पर्य है कि कोई भी संगठन डिजिटल चिह्न सृजित, जारी और सत्यापित कर सकता है और कोई भी उपयोगकर्त्ता इन चिह्नों को वेब पर अर्जित, प्रबंधित एवं प्रदर्शित कर सकता है (https://www.google.co.in/?gws_rd= ssl#q=What+are+open+badges)।

बहुत से संगठन, शिक्षणप्रदाता और समुदाय जैसे नासा (NASA), दि क्लिंटन ग्लोबल इनीशियेटिव, डि पॉल यूनिवर्सिटी, डिजिटल मी और शिकागो शहर पहले से ही मुक्त चिह्नों का उपयोग कई प्रकार के कौशलों और उपलब्धियों को पहचानने के लिए कर रहे हैं।

'चिह्न संसार' अधिगम जो कहीं भी होता है की पहचान पकड़ने के लिए एक नया सामाजिक और तकनीकी आंदोलन है। चिह्न संसार एक समुदाय सृजित करने और मुक्त चिह्न परियोजना में भी शामिल हैं उनके बीच विचार विमर्श को पोषित करने पर भी केन्द्रित करता है (http://www.badgetheworld.org/)।

आई एम एस ग्लोबल लर्निंग कंसोर्टियम, दि मोजिला फाउंडेशन और कोलक्टिव शिफ्ट/एन. आर.एन.जी. ने 28 अक्तूबर 2016 को आई.एम.एस. ग्लोबल के लिए एक समझौता घोषित किया जिसके द्वारा मुक्त चिह्न विशिष्टीकरण 1 जनवरी 2017 से लागू हाने के लिए उसके विकास को उन्नत करने, हस्तांतरणीयवाद और बाजार अनुकूलन के लिए उत्तरदायी संगठन होने के लिए था। एक मुक्त अभिशासन, सदस्य आधारित मानक कंसोर्टियम के रूप में आई. एम.एस. ग्लोबल, अनुकूलन, एकीकरण और डिजिटल चिह्नों की सुबाह्यता के लिए वचनबद्ध है जो अधिगमकर्त्ताओं, अध्यापकों एवं नियोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए है। मुक्त चिह्न समुदाय के सहयोग से आई.एम.एस. सदस्यों के नेतृत्व पर आधारित एक वैश्विक कौशल मुद्रा सृजित करने का लक्ष्य है (https://www.imsglobal.org/article/imsglobal-mozilla-foundation-and-lrng-announce-next-steps-accelerate-evolution-openbadges)।

मुक्त चिह्नों में स्कॉटलैंड की रूचि उन्नत हो चुकी है। *बार्डर कॉलेज* ऑफ स्कॉटलैंड मूड्ल का उपयोग करते हुए चिह्नों के उपयोग की पाइलटिंग कर चुका है। उन्होंने चिह्नों के तीन स्तर (कांस्य, रजत और स्वर्ण) विकसित किए हैं जो विद्यार्थियों को मूडल के उपयोग में सर्वोत्तम करने के लिए उनके पहले चिह्नों को पुरस्कृत करने की स्वीकृति देता है। एक उच्च स्तर का चिह्न प्लैटिनम भी है जो विद्यार्थियों एवं कर्मियों दोनों के लिए उपलब्ध है जो कक्षाकक्ष में तकनीक के उपयोग में सर्वोत्तम योगदान प्रदर्शित करने के लिए विचार किए गए हैं। पाइलट का एक अधिक संभाव्य तार्किक तत्व है कि पाठ्यक्रम के दौरान मूडल के सर्वोत्तम उपयोग करने वाले व्याख्याता के लिए वोट करने का अवसर विद्यार्थियों को भी दिया गया है। परियोजना के इस पहलू की अभीष्ट उपलब्धि है कि मूडल के उपयोग में समय एवं प्रयास करने वाले व्याख्यान कर्मी भी एक पहचान प्राप्त करेंगे, जो नवाचारी तकनीकों के उपयोग को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे (http://badges. thinkoutloudclub.com/modules/what/know/)।

स्काटिश एजुकेशन ग्रुप में मुक्त चिह्न (Open Badges in Scottish Education Group - OBSEG) एक नई रचना है जो स्कॉटिश में मुक्त चिह्न विकास के कार्य मानचित्रण और एक पुनरावलोकन का निष्पादन करता है। यह समूह आशा करता है कि स्कॉटलैंड की विविध शिक्षण संस्थाओं एवं एजेंसियों के प्रतिनिधियों के इनपुट माध्यम से, यह अधिगमकर्त्ताओं के औपचारिक एवं अनौपचारिक अधिगम यात्रा के विभिन्न चरणों के बीच सहक्रिया करने में सक्षम होगा और स्कॉटलैण्ड के अंदर एक बैज जैव-प्रणाली का विकास करने में योगदान करेगा।

सारांश में, इस भाग में किया गया प्रयास आपको एक वैकल्पिक सतत आँकलन की एक समझ प्रदान करता है, ताकि आप इसकी प्रासंगिकता एवं महत्व की सराहना कर सकें, वे भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण एवं अधिगम के उभरते परिदृश्य में अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन के संदर्भ में इसकी सराहना कर सकें। हम आशा करते हैं कि मुक्त चिह्नों जैसे विकास अधिगम में और इसके अतिरिक्त आजीवन अधिगम के परिदृश्य में भी सन्निहित हो तथा विश्व भर में एक लोकप्रिय कार्य हो जाए।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) सतत् आँकलन के वैकल्पिक प्रणाली से आप क्या समझते हैं? वैकल्पिक आँकलन के पाँच उपकरणों/तरीकों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

11.6 सारांश

हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन प्रणाली और संपूर्ण योजना में सत्रीय कार्यों की भूमिका एवं स्थान तथा अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन का एक वृहद अवलोकन प्रस्तुत किया है। हमने ग्रेडिंग प्रणाली पर प्रकाश डाला है जो अधिगमकर्त्ताओं की उपलब्धियों के मूल्यांकन एवं आँकलन में अंकन पर एक नवाचार है और अंकन की खामियों को भी उजागर किया है तथा ग्रेडिंग की अच्छाइयों पर प्रकाश डाला है। हमने आँकलन के प्रकारों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान सतत आँकलन प्रणाली पर चर्चा की है तथा अधिगमकर्त्ता के निष्पादन के आँकलन में उनकी सेवाओं के उद्देश्यों पर भी चर्चा की है। वर्तमान सतत आँकलन प्रणाली की कुछ कमियों का वर्णन करने के अतिरिक्त हमने रूब्रिक, परियोजना, खुली पुस्तक परीक्षा, सत्र-पत्र और मुक्त चिह्नों के संदर्भ में सतत् आँकलन की वैकल्पिक प्रणाली के तात्पर्य को भी प्रकाशित किया है। उभरते वैश्विक परिदृश्य में आजीवन अधिगम और आँकलन के संदर्भ में अपनाए गए और सतत् नियत कार्य के संभाव्य विशिष्ट वैकल्पिक तरीकों पर भी हमने प्रकाश डाला है।

11.7 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) सतत आँकलन या रचनात्मक आँकलन पाठ्यक्रम के दौरान एक नियमित आँकलन है जो अधिगमकर्त्ताओं के अंतिम परिणाम में योगदान देता है। यह अधिगमकर्त्ताओं को नियमित प्रतिपुष्टि प्रदान करता है। वर्ष या एक शैक्षिक सेमेस्टर के दौरान अधिगमकर्त्ताओं को दिए गए नियत कार्यों, अभ्यासों एवं अन्य कार्यों ने सतत् आँकलन के प्रभावी उपकरणों के रूप में कार्य करता है।

2) सत्रीय कार्य दो तरफा संवाद का कार्य करते हैं। यह संवाद/शिक्षाशास्त्रीय अंतःक्रियाओं, की पहल करता है, पृथकता की भावना को दूर करता है, दूरस्थ अध्यापक एवं अधिगमकर्त्ता दोनों को प्रतिपुष्टि प्रदान करता है, विद्यार्थियों के अधिगम को बल प्रदान करता है और अधिगम के सतत् आँकलन के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है।

3) ग्रेडिंग के प्रमुख लाभों में निम्नलिखित सम्मिलित हैः (i) ग्रेडिंग अधिक यथार्थ और विश्वसनीय है बजाय अंकन के क्योंकि 0 – 100 का पैमाना घटकर 5 अंक, 7 अंक

और 9 अंक का पैमाना हो गया है। यह मानवीय योग्यता का अपूर्व आँकलन प्रदान करता है; (ii) बहुत यथार्थ पैमाना होने के कारण अंक प्रदाता की परिवर्तनशीलता के कारण होने वाली त्रुटि का अवसर ग्रेड में उसी नियत कार्य के अंकन की अपेक्षा न्यूनतम होती है; और (iii) विषय परिवर्तनशीलता के कारण त्रुटि कम होती हैं क्योंकि विभिन्न विषयों में अंकों/ग्रेडों के मूल्य में असमानता को ग्रेडिंग न्यूनतम कर देती है।

4) सतत् आँकलन की वैकल्पिक प्रणाली, जटिल कार्यों जो प्रत्यक्षतः अधिगम परिणाम से संबद्ध है का निष्पादन करने में विद्यार्थियों की क्षमता का आँकलन करने में लाभप्रद है जो सतत् आँकलन प्रणाली प्रदान नहीं करता है। यह न केवल व्यवहार्य विकल्प है बल्कि यह जो पढ़ाया गया एवं जो सीखा गया है के बीच अंतराल को दूर करने के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए एक उपागम के लिए आधार भी प्रदान करता है। इस प्रकार, वैकल्पिक आँकलन में सत्रीय कार्य के लिए दिए गए ग्रेड या क्रेडिट निष्पादन के विशिष्ट स्तर पर निर्भर हैं जो इसे करने के समय का ध्यान दिए बगैर प्राप्त किए गए हैं। जबकि समग्रता में पाठ्यक्रम के लिए दिया गया कोई क्रेडिट नियत कार्यों की विशिष्ट संख्या पर प्राप्त की गई निष्पादन के उपयुक्त स्तरों से संबद्ध है। एक पाठ्यक्रम में विद्यार्थी की प्रगति को इस प्रकार के उपागम द्वारा दर्ज करने में प्राथमिक चिंता दिए गए जाँच पर प्राप्त अंक से नहीं है, बल्कि जिसे विद्यार्थी के अंततः निष्पादन के उचित स्तर को प्राप्त करने से है। इसलिए, विद्यार्थी का प्रोफाइल विशेष रूप से विकसित किया गया है जो उन क्षेत्रों को पहचाने जिसमें विद्यार्थियों ने इच्छित निष्पादन स्तरों को प्राप्त किया है।

रूब्रिक, परियोजना, खुली पुस्तक परीक्षा, सत्र-पत्र और मुक्त चिह्न सतत् आँकलन के कुछ वैकल्पिक तरीके हैं।

11.8 संदर्भ ग्रंथ

http://ar.cetl.hku.hk/am_obe.htm — Retrieved on 27-06-2016.

http://badges.thinkoutloudclub.com/modules/what/know/ — Retrieved on 16-01-2017.

http://caconnectindia.com/ca-ipcc/open-book-exams-from-2017/ — Retrieved on 18-01-2017.

http://ctl.byu.edu/using-alternative-assessments -— Retrieved on 18-01-2017.

http://elearningfacultymodules.org/index.php/Rubrics — Retrieved on 18-01-2017.

http://www.ascd.org/publications/books/112001/chapters/What-Are-Rubrics-and-Why-Are-They-Important%C2%A2.aspx – Retrieved on 27-06-2016.

http://www.badgetheworld.org/ — Retrieved on 17-01-2017.

http://www.firstpost.com/living/open-book-exams-are-a-nice-change-but-successfulimplementation-needs-education-reform-2582726.html — Retrieved on 18-01-2017.

https://en.wikipedia.org/wiki/Term_paper — Retrieved on 17-01-2017.

https://openbadges.org/about/ — Retrieved on 16-01-2017.

https://teaching.unsw.edu.au/assessment-rubrics — Retrieved on 18-01-2017.

https://www.google.co.in/?gws_rd=ssl#q=What+are+open+badges – Retrieved on 27-06-2016.

https://www.imsglobal.org/article/ims-global-mozilla-foundation-and-lrng-announcenext-steps-accelerate-evolution-open-badges — Retrieved on 17-01-2017.

https://www.jisc.ac.uk/blog/so-what-are-open-badges-28-aug-2013 — Retrieved on 27-06-2016.

Kavaliauskienë, G., and Anusienë, L. (2007). The challenges for ESP learners: Alternative assessment of performance and usefulness of class activities. *SOCIALINIS DARBAS*. m. Nr. 6(1) p.134. At https://www.mruni.eu/upload/iblock/14a/15_kavaliauskiene_anusiene_kaminskiene. pdf — Retrieved on 27-5-2017.

Mohanan, K. P. at http://www.iiserpune.ac.in/~mohanan/educ/openbook.pdf — Retrieved on 17-01-2017.

Susan M. Brookhart and Anthony J. Nitko (2008). *Assessment and Grading in Classrooms*, Upper Saddle River, NJ: Pearson Education. (p.201) mentioned at http://www.ascd.org/publications/books/112001/chapters/What-Are-Rubrics-and-Why-Are-They-Important%C2%A2.aspx – Retrieved on 27-06-2016.

Thorpe, M. (1988). *Evaluating Open and Distance Learning.* London: Longmans.

Wolf, K. ,and Stevens, E. (2007). The Role of Rubrics in Advancing and Assessing Student Learning. *The Journal of Effective Teaching* (an online journal), Vol.7, No.1, pp.3-14 – at http://www.uncw.edu/jet/articles/vol7_1/wolf.pdf — Retrieved on 18-01-2017.

Woods, D. R., Marshall, R. R., and Hrymak, A. N. (1988). 'Self-assessment in the Context of the McMaster Problem-solving Programmes', *Assessment and Evaluation in Higher Education*, Vol.13, pp.107-27.

Suggested Readings

http://ctl.byu.edu/developing-functional-rubrics.

Huba, M. E., and Freed, J. E. (2000). "Using Rubrics to Provide Feedback to Students", *Learner-Centered Assessment on College Campuses.* Allyn & Bacon, Boston, pp.151-200.

Luft, J. A. "Rubrics: Design and Use in Science Teacher Education." Journal of Science Teacher Education 10.2 (1999): 107-121.

Millman, J. (1973). 'Passing scores and test lengths for domain-referenced measures', *Review of Educational Research*, 43, pp. 205-216.

Popham, W. J. (1978) *Criterion-referenced Measurement*, Prentice-Hall Inc, New Jersey.

11.9 इकाई अंत अभ्यास

आप अपने स्वयं के हित में यहाँ दिए गए प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी अथवा विस्तृत उत्तर लिख सकते हैं। इस प्रकार की टिप्पणी अथवा उत्तर आप की सत्रांत परीक्षा की तैयारी के दौरान आप की सहायता कर सकते हैं।

इकाई अंत्य प्रश्न

1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिगम आँकलन एवं मूल्यांकन पर एक वृहद अवलोकन दीजिए। (1000 शब्दों में)

2) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अपनाए गए सतत् आँकलन की वर्तमान प्रणाली का वर्णन कीजिए। (500 शब्दों में)

3) अंकन प्रणाली के क्या नुकसान हैं? (250 शब्दों में)।

4) ग्रेडिंग प्रणाली क्या है? ग्रेडिंग प्रणाली के लाभ क्या हैं? (250 शब्दों में)।

5) वैकल्पिक सतत् आँकलन से आप क्या समझते हैं? उपयुक्त उदाहरणों के साथ वर्णन कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

समालोचनात्मक चिन्तन के लिए प्रश्न

1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में खुली पुस्तक परीक्षा की उपयुक्तता का परीक्षण कीजिए।

2) आपके विचार में ऊपर वर्णित सतत् आँकलन के कौन से वैकल्पिक तरीके मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अपनाने के लिए उपयुक्त हैं? कारण दीजिए।

3) क्या आप सोचते हैं कि मुक्त चिह्न वैश्विक स्तर पर भविष्य में प्रभावी अभ्यास होंगे? अपने उत्तर को उचित सिद्ध कीजिए।

क्रियाकलाप

मान लीजिए आपकी बी.एड. कार्यक्रम की कार्यशाला चल रही है। आप जिस कार्यशाला में है उसके लिए अपनी पसंद की एक गतिविधि का चयन कीजिए और इसमें अपने निष्पादन के आँकलन के लिए एक रूब्रिक तैयार कीजिए। इसके सुधार के लिए और इसे आँकलन के लिए एक बेहतर उपकरण बनाने के लिए इसे अपने सहयोगियों और संसाधन व्यक्तियों के साथ चर्चा कीजिए।